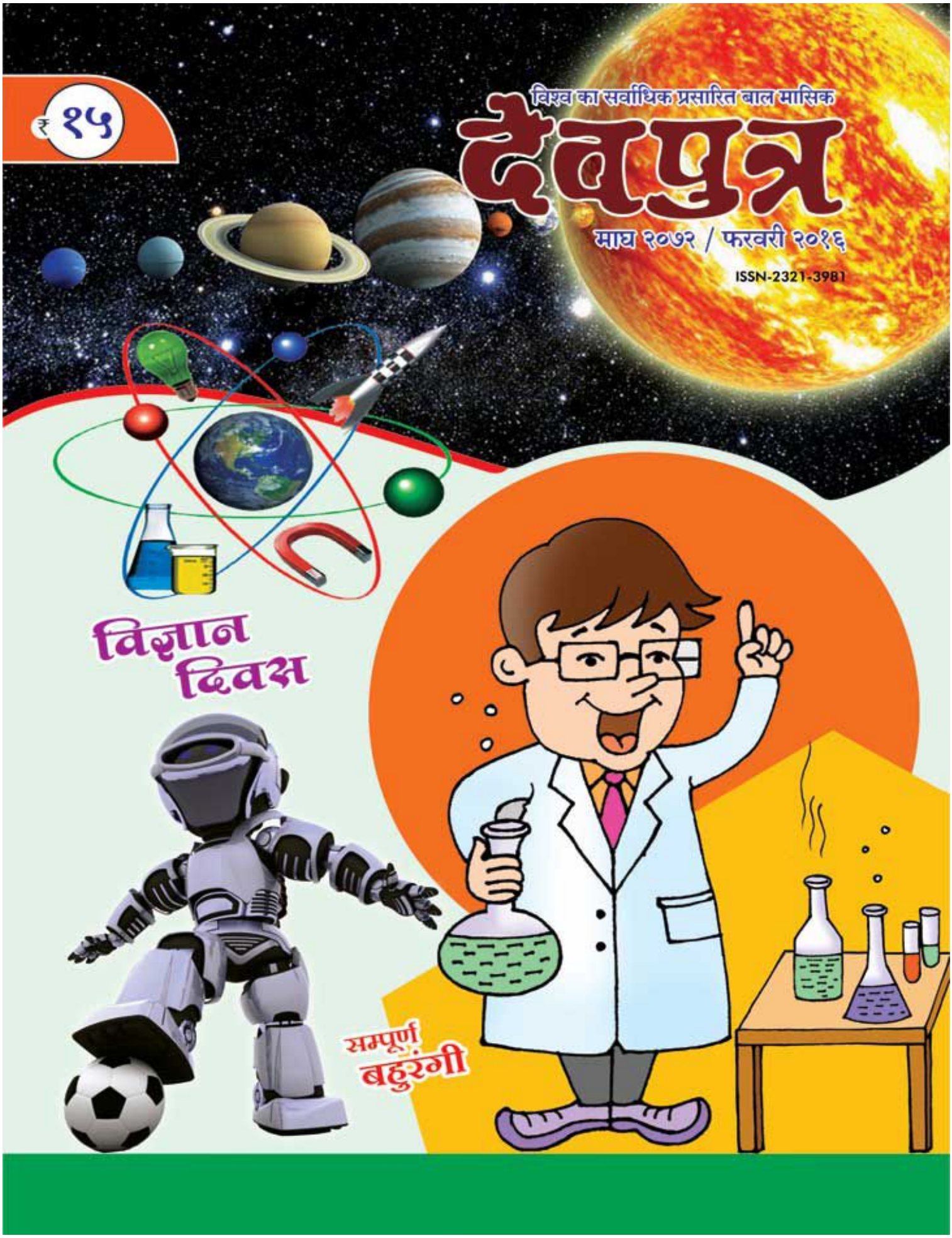

₹ १५
विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
माघ २०७२ / फरवरी २०१६
ISSN-2321-3981
विज्ञान दिवस
सम्पूर्ण बहुरंगी

दृष्टि The Vision
Most trusted & renowned institute among IAS aspirants
पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम
किरण कौशल 3rd Rank
अजय मिश्रा 5th Rank
लोकेश कुमार सिंह 10th Rank
प्रदीप राजपुरोहित 13th Rank
निशांत जैन 13th Rank
Online Test Series
For Preliminary Exam-2016
Get yourself prepared for 7th August, 2016
General Studies & CSAT
Starts from: 24th January, 2016
First test Free for all students
For More Details visit: drishtiias.com
करेंट अफेयर्स टुडे
महत्त्वपूर्ण लेख
सीरिया में शह और मात का खेल
ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस में भारत की स्थिति
नेट न्यूट्रैलिटी का महत्त्व
सरोगेसी के विनियमन से जुड़े प्रश्न
करेंसी वॉर : एक नवीन वैश्विक आर्थिक संघर्ष
रणनीतिक आलेख
मुख्य परीक्षा में उत्तर कैसे लिखें?
एथिक्स एवं वाद-विवाद
कार्ल मार्क्स के नैतिक विचार
भारत में बढ़ती असहिष्णुता
टॉपर्स से बातचीत
मनीष कुमार वर्मा
डॉ. विभोर अग्रवाल
मुख्य परीक्षा विशेषांक
सामान्य अध्ययन के चारों प्रश्नपत्रों का 12 खंडों में वैज्ञानिक वर्गीकरण एवं प्रत्येक खंड पर इस वर्ष की मुख्य परीक्षा के लिये महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
इन प्रश्नोत्तरों के माध्यम से सिर्फ 7 दिनों में पूरे सामान्य अध्ययन का त्वरित रिविज़न
और भी बहुत कुछ....
विभिन्न राज्यों से जुड़े
हिंदी माध्यम के IAS टॉपर
क्या कहते हैं इस पत्रिका के बारे में...
राजेन्द्र पैंसिया
IAS- उ.प्र. कैडर
"हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि पत्रिका कौन सी पढ़ी जाए? इसके लिये सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, प्रामाणिक और सारगर्भित स्रोत 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' के माध्यम से मिलता है। इंटीग्रेटेड एप्रोच से तैयारी के लिये हिंदी माध्यम में ऐसी किसी पत्रिका का अभाव था जो प्रिलिम्स, मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार की ज़रूरतों को पूरा कर सके। विकास सर के मार्गदर्शन में यह पत्रिका निश्चित ही इन सभी मानकों पर खरी उतरती है। हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी गूगल ट्रांसलेटेड मैटीरियल पढ़ने की बजाय यह पत्रिका पढ़ें जो पूर्णतः मौलिक व अनुभवी टीम की मेहनत का परिणाम है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका उनके लिये निश्चित रूप से वरदान साबित होगी। शुभकामनाएँ।"
Available at your nearest book shop
वितरण और विज्ञापन के लिए संपर्क करें-
(+91) 8130392355
FOR DAILY CURRENT AFFAIRS UPDATE Visit at www.drishtiias.com
641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 Contact : 011-47532596, (+91) 8130392354-56-57-59

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

माघ २०७२ ▪ वर्ष ३६
फरवरी २०१६ ▪ अंक ८

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

इन दिनों आप परीक्षा-बुखार से पीड़ित होंगे-यह मैं जानता हूँ। यह सामयिक है और इन दिनों में यह आपको परेशान करता ही है यह भी मुझे मालूम है। मुझे यह भी मालूम है कि सत्र भर इससे लड़ने की सतर्कता बनाए रखकर आप इसे मात देने में सफल होते हैं। इस बार भी होंगे, मेरी शुभकामनाएँ भी तो हैं आप के साथ।

परन्तु क्या आपने कभी यह विचार किया है कि हर वर्ष इस रोग को मात देकर आपको सफलता क्यों मिलती है? नहीं किया हो तो जानिये कि इस सफलता का रहस्य कुछ और नहीं आपका संकल्प है। मन की यह चाह है कि मुझे सफल होना ही है। बस जब आप अपने इस संकल्प का प्रतिदिन स्मरण करते हैं और उसकी पूर्ति में लगते हैं तो सफलता आपके निकट आती चली जाती है।

एक बड़ी पुरानी कहावत है 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'। कहावत इतनी सरल और प्रचलित है कि उसे किसी प्रकार से स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं। मन से संकल्प करने के कारण ही चलती ट्रेन से फेकें जाने और घायल तथा विकलांग हो जाने पर भी हमारी बहिन अनुराधा ने एवरेस्ट पर पहुंचने का अपना निश्चय पूरा किया। नेत्र ज्योति खोने के बाद भी पढ़ाई में कीर्तिमान और हाथ या पैरों से अपंग होने के बाद भी दांत और जीभ से चमत्कारिक कारनामों के कई प्रसंग आपने पढ़े और सुने होंगे। किंतु मन से कमजोर होने पर हार भी कैसे होती है, इसका एक प्रसंग भी जान लीजिए।

स्वभाव से भीरु गांव का एक आदमी बाजार कर गांव लौट रहा था। उसने बाजार से घर के अन्य सामान के साथ अपनी दो छोटी बच्चियों के लिए चूड़ियां भी खरीदी थीं, जो उसकी जेब में पड़ी थी। गांव लौटते-लौटते अंधेरा होने लगा और उसको उस बरगद के पेड़ को अभी पार करना था, जिसके संबंध में उसने सुन रखा था कि उस पर भूत रहते हैं और रात में वे किसी को भी परेशान करते हैं। मन में यह विचार आते ही उसने अंधेरा बढ़ने से पहिले ही पेड़ को पार कर लेने के लिए तेज चलना प्रारम्भ कर दिया, किंतु तेज चलने से जेब में पड़ी चूड़ियां बजने लगी। उसने अपनी गति को जैसे-जैसे बढ़ाया वैसे-वैसे चूड़ियों की आवाज और तेज होती गई। साथ ही उसके मन का यह विश्वास गहराता गया कि बरगद का भूत उसका पीछा कर रहा है। घर पहुंचते-पहुंचते वह बेहोश होकर गिर पड़ा।

क्या कहेंगे इसे आप? मन की हार वास्तविक हार से भी बड़ी होती है। मत फटकने दीजिए उसे अपने पास।

बस फिर सफलता और केवल सफलता होगी आपके पास।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- तारों भरी रात... - विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी ०५
- उपकार का बदला - उमेशचन्द्र सिरसवारी १८
- चमत्कार - डॉ. फकीरचन्द्र शुक्ला ३४
- हार का भूत - पूर्णिमा मित्रा ४४

लोक कथा

- गधा खेत खाय दत्ता जंगम ४३

लघुकथा

- सूझबूझ मीरा जैन ४२

कविता

- वैज्ञानिक बन जाऊँ - डॉ. चक्रधर 'नलिन' ०७
- निर्णय तुमको करना है - इन्दु पाराशर १७
- सुन्दर सुन्दर भाई - डॉ. वेदमित्र शुक्ला 'मयंक' २४
- अंग बड़े अनमोल - घमण्डीलाल अग्रवाल ३३
- रोबोट - डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष' ४७

स्तंभ

- हमारे राज्य पुष्प - डॉ. परशुराम शुक्ल २१
- कॅरियर दिशा - डॉ. जयंतीलाल भंडारी २५
- पुस्तक परिचय - ३२
- जीवन शैली - प्रो. नंदकिशोर मालानी ४०

बाल लेखनी

- झरना - प्रतिष्ठा द्विवेदी २४
- जल्दबाजी का पश्चाताप - चन्द्रभान टोण्डे ३१

सबसे लम्बी कहानी - नीतिन भदौरिया ४६

विज्ञान दिवस विशेष

- विदेशी के सामने स्वदेशी - ०८
- विज्ञान हो अपनी भाषा में - ०९
- हर पल कीमती - ०९
- तड़क भड़क क्यों? - १०
- गलती से सीखो - ११

चित्रकथा

- सबसे अच्छा काम देवांशु वत्स २९

एवं ढेरों मनोरंजक व ज्ञानवर्धक सामग्री

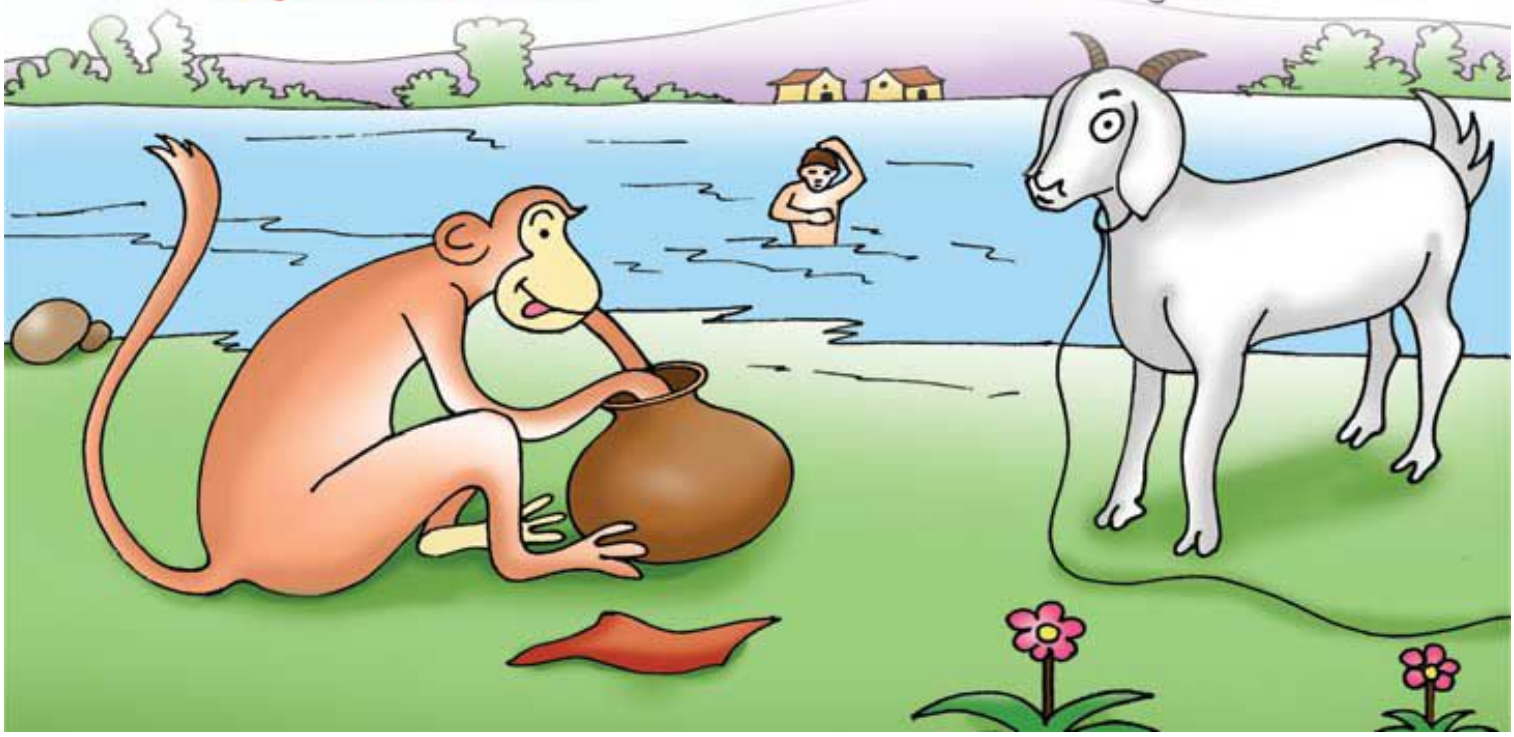

विज्ञान कथा : विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

तारों भरी रात, चंदा की बारात

''तारे सड़क पर'' श्याम पट्ट पर लिखे इन शब्दों को पढ़कर कक्षा में फुसफुसाहट का दौर शुरु हो गया। बच्चों ने तारे जमीं पर देखी थी। ईशान अवस्थी उनका तब से साथी था। कक्षा का यह विद्यार्थी अक्षर उल्टे लिखता था। सब उसे ईशान अवस्थी कहकर पुकारने लगे थे।

अध्यापक अतुल जी द्वारा श्याम पट्ट पर तारे सड़क पर लिखते ही सबका ध्यान तारे जमीं पर शीर्षक की ओर ही गया। उन्हें लगा कि उन ने भूल से जमीं के स्थान पर सड़क लिख दिया है। इसी कारण वे फुसफसाहट द्वारा एक दूसरे का ध्यान उन की उस गलती की ओर दिलाने का प्रयास करने लगे थे। कोई भी यह तय नहीं कर पा रहा था कि अध्यापक जी ने भूल से तारे सड़क पर लिखा है या जानबूझ कर? इस कारण कोई उठ कर उन को टोकने का साहस नहीं जुटा पा रहा था। अध्यापक भी चुपचाप खड़े कक्षा की स्थिति का आनन्द ले रहे थे।

कक्षा में मुखर रहने वाली आशा को वह चुप्पी सहन नहीं हुई। उसने कुछ कहने की अनुमति पाने को हाथ खड़ा कर दिया।

''मैंने श्याम पट्ट पर जो लिखा है, सही लिखा है। तारे अब जमीं से सड़क पर आ रहे हैं।'' उन ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा। यह सुनकर आशा ने अपना हाथ नीचे कर लिया। कक्षा की फुसफुसाहट एकदम समाप्त हो गई। उस दिन शनिवार था। कक्षा में पाठ्यक्रम से हटकर विज्ञान के किसी तत्कालीन विषय पर चर्चा होनी थी। उसी के संदर्भ में अध्यापक ने तारे सड़क पर वाक्य लिखा था। कक्षा की चुप्पी बता रही थी किसी को इस विषय में कोई जानकारी नहीं थी।

''बच्चो! अब हमें सड़क के तारे बनना है। क्या आप तैयार हैं?'' अतुल जी ने कक्षा से प्रश्न किया। किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। अतुल जी की कक्षा का नियम था कि प्रश्न पूछने पर न तो कोई हाथ खड़ा करेगा और न ही कोई जवाब देगा जब तक किसी को इंगित नहीं किया जावे।

''मुर्गा बनने से तो सड़क का तारा बनना ही अच्छा है। पर सड़क कोई छोटी ही चुनिएगा। बड़ी सड़क पर तेजी दौड़ते वाहनों से मुझे बहुत डर लगता है।'' सरदार मंजीत ने अतुल जी का संकेत पाकर कहा।

''तुम्हारे सुझाव पर पूर्ण ध्यान दिया जाएगा।''

तुम्हें किसी भी सड़क पर जाने को नहीं कहा जाएगा।

तुम्हें रात में छत पर जाना है।

आकाश में दिखने वाले तारे गिन कर बताना है।'' अतुल जी ने कविता के लहजे में कहा।

''आकाश में दिखते हजारो तारे,

सुन्दर, सुन्दर, प्यारे, प्यारे।

हम सही नहीं गिन पाएंगे?

गलत संख्या ही बताएंगे।''

पूछे जाने पर मुकेश ने अपनी कविता क्षमता का परिचय देते हुए कहा–

''तुम्हारी कविता तो बहुत अच्छी है।

मगर बात कुछ कुछ कच्ची है।

आसमां में हजारों तारे, देख नहीं पाओगे।

सौ से कम गिनती ही, तुम गिन पाओगे।''

अतुल जी ने बताया। उनकी बात सुन कक्षा में सन्नाटा छा गया। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि आकाश में शेष तारे कहाँ छुप जाएंगे?

''आजकल तुम चंदा तारे भी टीवी के पर्दे पर देखने लगे हो। रात्रि आकाश की ओर झांकने की फुर्सत ही किसे है? आकाश में अब हजारों तारे नहीं दिखाई देते। सांझ होते ही चारों ओर बड़ी बड़ी बत्तियां जल जाती है। उनसे फैले प्रकाश में तारों का दिखना बन्द हो गया है। एक फिल्म के गीत की पंक्ति 'चंदा की बारात होगी, तारों भरी रात होगी' अब अपना महत्व खोने लगी है। शहरों तथा राजमार्गों के सहारे बिखरे कृत्रिम प्रकाश के कारण, आकाश में चंदा तो दिखाई देता है। तारे दिखाई नहीं देते। घर की छत पर खड़े होकर तारा समूह नक्षत्र आदि देखना शहरी क्षेत्रों में संभव नहीं रहा है। प्रकाश प्रदूषण की ओर सबका ध्यान आकर्षित करने के लिए ही नेहरू प्लेनेटोरियम की अध्यक्ष ने तारे सड़क पर अभियान शुरु किया गया है। किसी क्षेत्र में प्रकाश प्रदूषण जितना अधिक होता है, आकाश में दिखने वाले तारों की संख्या उतनी ही कम होती है। देश के कई संस्थान इस स्वेच्छिक अभियान से जुड़े हैं।'' सब अतुल जी की बात ध्यान से सुन रहे थे। ''शायद तुम कुछ कहना चाह रहे हो रवि!'' अतुल जी ने रवि की ओर संकेत करते हुए कहा। ''मुझे अंधेरे में बहुत डर लगता है। हमारे शहर में लगी ऊँची–ऊँची सोडियम लाइटें मुझे बहुत पसंद हैं। किसी को उससे नुकसान हुआ हो मैंने तो नहीं सुना।'' रवि बोला।

''आँख बन्द कर लेने से खतरा टल नहीं जाता है। प्रकाश प्रदूषण चुपचाप मनुष्य जीव–जन्तु, पेड़–पौधों को नष्ट कर रहा है। तभी तो उसकी ओर ध्यान आकर्षित करने की बात हो रही है। अनेक देशों से चलने वाले व्यापार, व्यवहार के कारण भारत में भी अनेक कार्यालय रात्रि में चलते हैं। इन कार्यालयों में बहुतायत से फैला कृत्रिम प्रकाश, थकान, तनाव, उच्च रक्तचाप, सिरदर्द, माइग्रेन, कमजोर नजर का कारण बन रहा है। प्रकाश प्रदूषण केंसर जैसे जानलेवा रोग को भी जन्म दे सकता है। मनुष्य को प्रकृति ने दिन में काम रात में आराम करने जैसा बनाया है मगर अब २४ घण्टे के दिन में रहने लगा है।'' ''क्या इससे अन्य जीव भी प्रभावित हो रहे हैं?'' सुरभि ने जानना चाहा।

''मैंने अभी बताया कि सभी जीव प्रभावित हो रहे हैं। चलो कीटों की ही बात करें। प्रकाश से आकर्षित हो बड़ी संख्या में कीटों को मरते आपने भी देखा होगा। हर कीट किसी न किसी खाद्य श्रंखला का सदस्य होता है। अतः कीट मरने का प्रभाव बड़े जीवों पर होता है। पादपों में परागण कराने में कीटों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कीट मरने का विपरीत प्रभाव पौधों पर अर्थात् हमारे खाद्यान्न उत्पादन पर भी होगा। कृत्रिम प्रकाश से भ्रमित हो हजारों प्रवासी पक्षी एक साथ जान गवांते हैं। और भी बहुत सी बातें हैं जिन्हें गौर करोगे तो तुम स्वयं जान जाओगे।'' अतुल जी ने बताया। इतने में घंटी बज गई। अतुल जी अगली कक्षा की ओर चल दिए।

– पाली (राज.)

कविता : डॉ. चक्रधर 'नलिन'

वैज्ञानिक बन जाऊँ

ईश्वर ऐसा करो कि मैं भी
वैज्ञानिक बन जाऊँ।
नई नई खोजों के द्वारा
जग में खुशियाँ लाऊँ।
वैज्ञानिक महान होते हैं,
नहीं समय अपना खोते हैं
नहीं जान कोई पाता है
कब जगते हैं कब सोते हैं,
नए, नए आविष्कारों से
दिशा-दिशा चमकाऊँ।

ईश्वर ऐसा करो कि मैं भी
वैज्ञानिक बन जाऊँ।
सब उसको आदर देते हैं,
नाव देश की यह खेते हैं,
दुनिया में यश फैलाते हैं,
गलत नहीं कुछ भी लेते हैं,
सकल राष्ट्र को करूँ सुवासित
घर, बाहर महकाऊँ।
ईश्वर ऐसा करो कि मैं भी
वैज्ञानिक बन जाऊँ।

नित नवीन खोजें करते हैं,
हर अभाव को यह भरते हैं,
ज्ञान पताका फहराते हैं,
भार देश का यह धरते हैं,
करूं मनुष्य जाति की सेवा
सबका आदर पाऊँ।
ईश्वर ऐसा करो कि मैं भी
वैज्ञानिक बन जाऊँ।

● लखनऊ (उ.प्र.)

राष्ट्रीय विज्ञान दिवसः २८ फरवरी

स्वदेश के अभिमानी भारत के विज्ञानी

विदेशी के सामने स्वदेशी

आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय

वे कलकत्ता के प्रेसिडेंसी कॉलेज में रसायन विभाग के प्राध्यापक थे। उस जमाने में शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेजों का ही बोलबाला था, देश पर उनका शासन जो था। एक दिन एक अंग्रेज ने ताना कसा कि ''विदेशी दवाओं के सामने देशी दवाएं भला क्या टिकेंगी?''

भला एक देशभक्त भारतीय वैज्ञानिक को यह बात कैसे सहन होती? बातों का जवाब बातों से नहीं काम से मिला। उन्होंने बंगाल केमिकल्स की स्थापना की और वह कर दिखाया जो वह अंग्रेज असंभव मानता था।

हिस्ट्री ऑफ हिन्दू केमिस्ट्री (हिन्दू रसायन का इतिहास) नामक अत्यंत प्रामाणिक बृहद ग्रंथ लिखा और सारी दुनिया को, प्राचीन भारत के रसायन विज्ञान की शोधों की श्रेष्ठता मनवा ली। सिद्ध कर दिया कि प्राचीन भारत का रसायन ज्ञान इतना उन्नत था जितना कि पाश्चात्य देशों में १७ वीं शताब्दी तक भी न था।

वे केवल अपने अनुसंधानों में ही व्यस्त न रहे अपितु उनका मानना था **''मैं रसायन शाला का जीव हूँ। मगर ऐसे भी अवसर आते हैं जब समय की आवश्यकता होती है कि परखनली छोड़कर देश की पुकार सुनी जाए।''** उन्होंने यह स्वयं करके भी दिखाया भारतीय स्वातन्त्र्य आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने वाले। भारत की माटी के इस सच्चे सपूत का नाम था **आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र राय**।

सत्य है–

राष्ट्रस्यार्थे न यद् ज्ञानं राष्ट्रस्यार्थे न यद्धनम्।
राष्ट्रस्यार्थे बलंयन्न धिक् तद्ज्ञानं धनम्बलम्।।

विज्ञान हो अपनी भाषा में

डॉ. आत्माराम

जब तक बच्चे को अपनी भाषा में विज्ञान जैसे जटिल विषय को पढ़ने का मौका नहीं मिलेगा तब तक वह न तो समझ सकेगा और न ही देश में पर्याप्त वैज्ञानिक वातावरण बन सकेगा। देश में वैज्ञानिक पिछड़ेपन का कारण वे इसी को मानते थे। अपनी भाषा में विज्ञान शिक्षा के प्रबल आग्रही विज्ञानी थे डॉ. आत्माराम। उन्होंने स्वयं अपने जीवन में मातृभाषा में विज्ञान के अध्ययन की असुविधा को भोगा था। 'ओजोन की छतरी' विज्ञान पर बच्चों के लिए लिखी उनकी रोचक पुस्तक भी है। वे अन्य बाल साहित्यकारों को बताते थे– परीकथाओं के मोहजाल से निकाल कर अपने आसपास को जानने समझने की भूख बच्चों में विज्ञान युग की जटिलताओं से जूझ सकेंगे।

आप्टीकल ग्लास के निर्माण में भारत को स्वावलम्बी बनाने के लिए देश इस रसायन विज्ञानी का ऋणी रहेगा।

हर पल की कीमत

मोक्षगुण्डम् विश्वैश्वरैया

पिता बचपन में ही चल बसे। माँ ने मामा की सहायता से उन्हें जैसे तैसे पाला। कोलार जिले के चिकवल्लपुर के पास मदनहल्ली गांव में जन्मे इस प्रतिभाशाली बालक ने बी.ए. की पढ़ाई के लिए बैंगलुरु के सेन्ट्रल कॉलेज में प्रवेश तो ले लिया पर न रहने की जगह न खर्च के लिए धन। ट्यूशन पढ़ाकर काम चलाया। जहाँ पढ़ाते वही सो जाते मामा के घर जा कर खा लेते। और परिणाम? बी.ए. की परीक्षा विशेष योग्यता के साथ उतीर्ण।

सफलता के लिए दो आदर्श अपनाए **एक क्षण भर भी बेकार न करना।** दूसरा **कार्यक्रम बनाकर काम करना।** इंजीनियरिंग की परीक्षा में मुम्बई विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम रहे।

आगे चल कर वे आधुनिक भारत के भगीरथ कहलाए। बैंगलुरु, पूना, मैसूर, कराची, बड़ौदा, हैदराबाद, ग्वालियर, इन्दौर, धारवाड़, बीजापुर जैसे नगरों में सुन्दर जल व्यवस्था, कावेरी नदी पर कृष्णराज सागर बांध, मैसूर का वृन्दावन गार्डन, भद्रकाली का इस्पात कारखाना आदि अनेक अद्‌भुत वास्तु रचनाओं से इस देश का मान बढ़ाने वाले यहा महान इंजीनियर थे– भारत रत्न **मोक्षगुण्डम् विश्वैश्वरैया।**

भारत के विज्ञानी

तड़क भड़क क्यों?

उन दिनों लखनऊ विश्वविद्यालय का भवन बन ही रहा था। केवल तीन कक्ष ही बने थे। वनस्पति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष भी वहीं काम करते थे। एक दिन एक विदेशी विज्ञानी उनसे मिलने आए। उनने आते ही किसी से पूछा– ''आपके विभागाध्यक्ष कहाँ बैठते हैं?'' ''वे उस कोने में।'' आगन्तुक कोने में पड़ी मेज के पास पहुँचा जो कापियों–किताबों से पटी पड़ी थी। उसी मेज पर विभागाध्यक्ष सूक्ष्मदर्शी में आँखें लगाए कुछ देख रहे थे। आगन्तुक आश्चर्यचकित था– ''क्या आपका कोई निजी कमरा नहीं है?'' वह जानता था ये विभागाध्यक्ष महोदय महान वनस्पति विज्ञानी थे।

आत्मविश्वास से भरा उत्तर मिला– **''बड़े कामों के लिए किसी तड़क भड़क की नहीं, निष्ठा और लगन की जरूरत होती है।''** वनस्पति के अवशेषों पर अपनी खोजों से विश्व को चकित कर देने वाले ये वनस्पति विज्ञानी थे – **प्रो. बीरबल साहनी।**

सत्य है

क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणैः।

गलती से सीखो

डॉ. विक्रम साराभाई

सन् १९४८। स्थान अहमदाबाद के महात्मा गांधी विज्ञान संस्थान की प्रयोगशाला। दो विद्यार्थी कुछ प्रयोग कर रहे थे कि ज्यादा करंट प्रवाहित होने से यंत्र फुंक गया। इधर यह कीमती यंत्र जला उधर से उनके गुरुजी आते दिखे। विद्यार्थियों की सिट्टीपट्टी गुम, गुरुजी को जवाब देने के लिए बात एक दूसरे पर ढोलने लगे।

गुरुजी ने शांति से पूछा। एक ने सहमे हुए कहा ''अधिक बिजली गुजरने से मोटर जल गई है श्रीमान्।'' ''बस इतना ही? चिंता मत करो काम करते हैं तो ऐसा तो हो ही जाता है। गलतियाँ ही तो हमें सिखाती है। पर आगे से ध्यान रखो, यह जरूरी है।'' गुरुजी ने अतिशय भय का करंट पास होने से उनकी प्रतिभा की मशीन जलने से बचा ली थी। वे जानते थे भय से रचनात्मकता बोथरी हो जाती है।

ये थे महान अन्तरिक्ष वैज्ञानिक **डॉ. विक्रम साराभाई**

सामान्यतौर पर हमें देखने में आता है कि अनेक विशेषज्ञ विद्वान सामान्य लोगों से बातचीत करने या उनके प्रश्नों का उत्तर देने में अपनी विशेषज्ञता का अपमान और समय की बरबादी मानते हैं, लेकिन महान वैज्ञानिक होकर भी डॉ. विक्रम साराभाई की सोच एकदम अलग थी।

वे कहते थे **अपने इतने विशाल देश में लोग कहाँ कहाँ से आते हैं और प्रत्येक व्यक्ति इतना भाग्यशाली नहीं है कि वह ज्ञान उसे मिला हो जो हमें मिला है इसलिए हमें उनकी बात सुन लेना चाहिए समझ लेना चाहिए।** वे सामान्यजनों की कहानियाँ, कठिनाइयाँ सुनना भी कभी वक्त की बरबादी नहीं मानते थे।

सत्य है

विद्या विनयेन शोभते।

शब्दक्रीडा(१५)

स्वराज के पुजारी

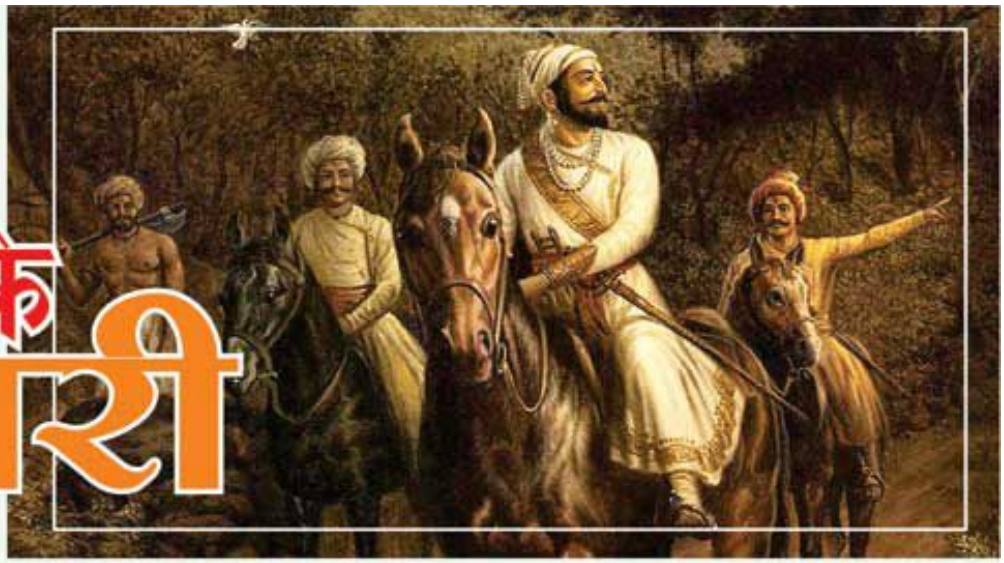

बच्चो! १९ फरवरी १६३० को भारत भूमि पर एक ऐसे महापुरुष का जन्म हुआ जिसने साधारण किसानों, मजदूरों ओर मावले ग्रामीणों नागरिकों को अद्‌भुत संगठन कौशल से स्वराज्य का सिपाही बना दिया। महाराष्ट्र के शिवनेरी किले में जन्में इस अप्रतिम स्वराज्य स्वाभिमानी का नाम था छत्रपति शिवाजी राजे भोंसले। औरंगजेब जैसे धर्मांध और असहिष्णु बादशाह को नाकों चने चबवाने में शिवाजी का प्राणपण से साथ निबाहने वाले स्वराज्य के ऐसे दस पुजारियों के नाम खोजने हैं आपको इस बार शब्दक्रीड़ा में। पद्धति हमेशा की तरह ही होगी पर इस बार आपकी सरलता के लिए हम उनकी पहचान के संकेत भी दे रहे हैं। कठिन लगे तो अपने बड़ों से पूछिए लेकिन यह पहेली जरूर बूझिए। शब्द क्रीड़ा में छुपे है इनके नाम।

ता	स	बा	स	गं	गा	भ	ट्ट	स्वा	ता
स	ने	ता	जी	पा	ल	क	र	म	ना
मी	म	जा	ना	प्र	ला	हा	म	वा	जी
भ	बा	र्थ	दा	मो	भु	जी	व	प्र	मा
ई	भु	र्थ	रा	म	गा	दे	बा	दा	लु
दो	गं	र	मा	म	ण्ड	दे	श	जी	सु
वा	बा	श	फ	को	दा	लु	ई	पा	रे
जी	जा	र्जा	जी	सु	म	स	बा	ट	ण्डे
ण्ड	दे	दो	न्द	फ	पा	हा	स्वा	रे	ला
व	दा	न्द	र्ज	फ	जी	रो	ही	मी	ण्डे

०१. स्वराज्य की जीवंत प्रेरणा बीर माता जिसने शिवाजी को आजीवन स्वराज्य सेवक बनाए रखा।

०२. बाल शिवा ने जिनके निर्देशन में सीखी शस्त्र कला।

०३. शिवाजी जैसे ही बीर होने से कहलाए प्रति शिवाजी।

०४. अफजल वध के समय शत्रु के खेमे में शिवाजी के साथ रहा महाबलशाली, तलवार का धनी।

०५. गढ़ आया पर सिंह गया की उक्ति जिसके बलिदान पर कही गई थी।

०६. शिवाजी के सुरक्षित किले पर पहुंच जाने तक शत्रु सेना से अकेले लड़ता रहा, पावनखिण्ड का बलिदानी।

०७. आगरा में औरंगजेब की कैद से निकालने के लिए जो उनकी शैया पर शिवाजी बन लेट गया।

०८. पुरन्दरगढ़ की लड़ाई में सिरकट जाने पर जिसका धड़ भी लड़ता रहा।

०९. शिव राज्याभिषेक कराने वाले काशी से पधारे विद्वान पुरोहित।

१०. शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु स्वराज्य योगी, दासबोध के रचयिता।

(सही उत्तर इसी अंक में)

पदार्थों के नाम बताओ?

विज्ञान पहेलियाँ : चन्द्रप्रकाश पटसारिया

१.
नेत्र ज्योति के लिए जरूरी,
एक विटामिन उपयोगी।
जिसे विटामिन मिल जाए,
होता नहीं नेत्र का रोगी।।

२.
कम प्रकाश में देखे चाहो,
है कौन पदार्थ जरूरी।
आँखों में रहकर करता है,
क्रिया देखने की पूरी।।

३.
एक वर्णक बतलाइए,
जो लाल रंग दिखालाए।
लाल टमाटर में रहता,
यह कैंसर रोग बचाए।।

४.
वसा, तेल, घी चर्बी से,
मानव रक्त में बन जाए,
धमनी अवरोधित करें,
वह क्या पदार्थ कहलाए?

५.
हम आक्सीजन से रहित,
एक अम्ल कहलाते,
पृथक-पृथक हर जीव में,
रचना एक बनाते।।

(उत्तर इसी अंक में)

६.
रतन जोत से निकला तेल,
जिसने दिखलाया है खेल।
इंजन, गाड़ी, बस चलवाई,
कौन नाम ये ईंधन भाई।।

• उनाव (उ.प्र.)

मंगल कामना

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:ख भाग्भवेत् ।।

सब सुखी हों।
सब रोगरहित हों।
सब कल्याण का साक्षात्कार करें।
दु:ख का अंश किसी को भी प्राप्त न हो।

औषधियों के निर्माता
रसोमा लेबोरेटरीज प्रायवेट लिमिटेड

देखो अपनी दृष्टि गड़ा तारा किससे कौन बड़ा?

बच्चों रात की चौपाल पर कई तारे जमा हुए है आपको पता लगाना है कौनसा तारा किससे बड़ा है?

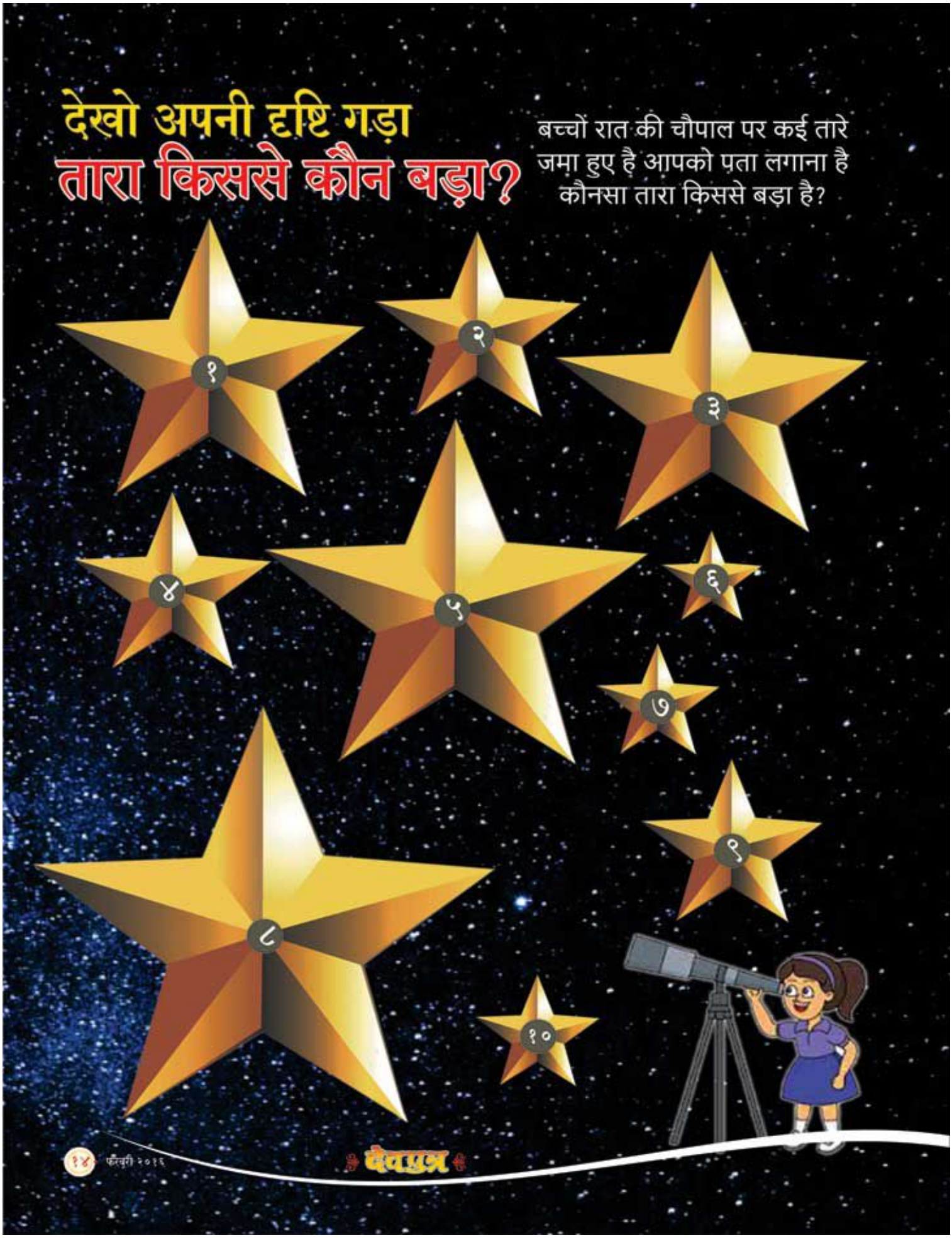

छोटे-छोटे गांवों में जन्मे बड़े विज्ञान पुरुष

श्री श्रीनिवास कृष्णन्
४ दिसम्बर १८९८
बत्रप गांव (तमिलनाडू)

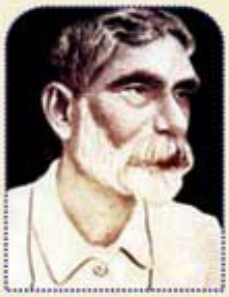

आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय
२ अगस्त १८६१
राढुली ग्राम (बंगलादेश)

डॉ. मोक्षगुण्डम् विश्वेश्वरैया
१५ सितम्बर १८६१
मदनहल्ली गांव (कर्नाटक)

श्री श्रीनिवास रामानुजन्
२२ दिसम्बर १८८७
इरोद गांव (तमिलनाडू)

डॉ. जगदीशचन्द्र बसु
३० नवम्बर १८५८
फरीदपुर गांव (बंगाल)

सर गंगाराम
१३ अप्रैल १८५१
मंगतवाली गांव (पंजाब)

डॉ. मेघनाद साहा
६ अक्टूबर १८९३
ओढ़तली गांव (बांगलादेश)

डॉ. हरगोविन्द खुराना
९ जनवरी १९२२
रायपुर गांव (पंजाब)

डॉ. शांतिस्वरूप भटनागर
२१ फरवरी १८९४
भेरा गांव (पंजाब)

सोचिए : विज्ञान की विविध शाखाओं भौतिकी, रसायन, वनस्पति, परमाणु विज्ञान, कृषि, गणित, अभियांत्रिकी आदि क्षेत्रों में ये वे महान विज्ञान महर्षि है जिनका आधुनिक भारत के निर्माण में अतुल्य योगदान कभी भुलाया नहीं जाएगा। अधिकांश की बचपन में आर्थिक परिस्थिति भी खराब ही थी और वे जन्मे थे छोटे छोटे गांवों में। उस समय जब पूरा देश अंग्रेजों का गुलाम था।

क्या स्वतंत्र भारत की प्रतिभाएं तबसे अधिक प्रखर नहीं होना चाहिए? ग्रामवासिनी भारत माँ की आशा है आप जैसे बच्चों से।

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

देवपुत्र प्रश्नमंच

(१) अपने शोध ग्रंथ 'हिस्ट्री ऑफ हिन्दू केमिस्ट्री' द्वारा भारतीय रसायन विज्ञान की उज्ज्वल परम्परा से विज्ञान जगत को अचंभित करने वाले महान रसायन शास्त्री थे-

(क) नागार्जुन

(ख) आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय

(ग) व्याडि

(२) आधुनिक भारत के विश्वकर्मा और भारतीय इंजीनियरों के पितामह माने जाते हैं-

(क) ब्रह्मा

(ख) मय

(ग) विश्वैश्वरैया

(३) पंजाब की हरित क्रांति के अग्रदूत और लिफ्ट सिंचाई के अनुसंधानकर्त्ता महान इंजीनियर थे-

(क) विश्वैश्वरैया

(ख) जगदीशचन्द्र बसु

(ग) सर गंगाराम

(४) वर्तमान भारत का औद्योगिक ढांचा तैयार करने में जिनका प्रमुख योगदान था, कोलकाता स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर फिजिक्स नामक संस्थान के संस्थापक विज्ञानी थे-

(क) डॉ. मेघनाद साहा

(ख) आचार्य पी.सी. राय

(ग) प्रो. सत्येन बोस

(उत्तर इसी अंक में)

(५) क्वांटम सांख्यिकी के जनक, बोसोन कण के खोजकर्त्ता महान वैज्ञानिक हैं-

(क) जगदीशचन्द्र बोस

(ख) प्रो सत्येन्द्र नाथ बोस

(ग) मेघनाद साहा

(६) पौधे भी हमारी तरह दुःख दर्द अनुभव करते हैं, सांस लेते हैं भोजन करते हैं, जीते और मरते है, सिद्ध करने वाले वैज्ञानिक थे-

(क) जगदीशचन्द्र बसु

(ख) आचार्य चरक

(ग) आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय

(घ) क्रिस्टल के चुम्बकीय गुणों पर विशेष शोध कार्य करने वाले तथा राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला के प्रथम निदेशक थे।

(क) डॉ. सत्येन बोस

(ख) डॉ. श्रीनिवास कृष्णन्

(ग) श्री मेघनाद साहा

(८) प्रकाश के रंगों के फैलने की प्रवृत्ति पर जिनका शोध 'रामन् प्रभाव' के नाम से संसार में प्रसिद्ध है वे विज्ञान है।

(क) डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

(ख) श्री चन्द्रशेखर वैंकटरामन

(ग) आ. प्रफुल्लचन्द्र राय

(९) वे चट्टानों में दबे वनस्पति के प्राचीन अवशेषों का अध्ययन करते थे, उनकी इच्छा भी एक वनस्पति विज्ञान मंदिर की स्थापना करने की। वे भारतीय पुरावानस्पतिक विज्ञान के जनक हैं-

(क) प्रो. बीरबल साहनी

(ख) श्री जगदीशचन्द्र बसु

(ग) डॉ. सत्येन बोस

(१०) भारत के परमाणु विज्ञान एवं रक्षा विज्ञान को अपना महत्वूपर्ण योगदान देकर वे 'मिसाईल मेन' कहलाए।

(क) डॉ. होमी जहांगीर भाभा

(ख) श्री विश्वैश्वरैया

(ग) डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

कविता : इन्दू पाराशर

निर्णय तुमको करना है

बात करें प्राचीन काल की,
नहीं कोई साधन होते थे।
कहीं कोई सूचना भेजना,
सबसे कठिन काम होते थे।
खुद संदेश लेकर के वाहक,
दौड़ के या घोड़े पर जाते।
पास पहुँच कर के दूजे को,
तब पहले की बात बताते।
बने कबूतर भी संदेसिये,
फिर चिट्ठी की बारी आई।
डाक, तार से गए संदेशे,
टेलीफोन व्यवस्था आई।
बच्चो, आज प्रगति तो देखो,
मोबाइल का यह युग है।
आज किसी से बातें करना,
नहीं जरा भी मुश्किल है।
रेडियो टेलीविजन हमारे,
जन-संचार माध्यम हैं।
देश-देश की खबर जानना,
सबको पल में मुमकिन है।
आई-पेड और टेबलेट भी,
तो संचार माध्यम है।
वाट्स-एप पर चित्र भेजना,
क्या तिलस्म से कुछ कम है।
वाट्स-एप पर ग्रुप बनाकर
बच्चो, पाठ समझ सकते हो।
चित्र और मेटर संग-संग में,
बच्चो सांझा कर सकते हो।
एम.पी.थ्री. और आई-पॉड पर,
तरह-तरह के म्यूजिक सुन लो।
कम्प्यूटर और लेपटॉप पर,
गुगल से हर बात जान लो।
साधन हैं उपलब्ध अनेकों,
इसका चयन तुम्हें करना है।
किसमें कितना समय बिताएँ,
यह निर्णय तुमको करना है।

• इन्दौर (म.प्र.)

उपकार का बदला

कहानी : उमेशचन्द्र सिरसवारी

अंकित अपने बगीचे में बैठा गणित की तैयारी कर रहा था। इसी महीने की १५ तारीख को उसकी वार्षिक परीक्षा थी इसलिए वह तैयारी में कोई कोर-कसर बाकी नहीं छोड़ना चाहता था। उसके माता-पिता के भी यही कड़े निर्देश थे-''बेटा, अच्छे से पढ़ाई करो और अच्छे अंक लाकर दिखाओ।''

अंकित सक्सेना, यह उसका पूरा नाम था, परन्तु परिवार में सभी अंकित कहकर ही बुलाते थे। वह पढ़ने में होशियार था, अंकित विद्यालय में हुए विभिन्न अवसरों पर कई प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार जीत चुका था। तब हिन्दी के प्राध्यापक महेशचन्द्र गौतम उसके अन्दर 'छिपी प्रतिभा' को पहचानकर उसे आगे बढ़ते रहने का आशीर्वाद दिया- ''अंकित! बेटा तुम्हें अभी बहुत आगे जाना है। निरंतर अभ्यास करो और सभी विषयों को एकाग्रचित होकर पढ़ो और अच्छे अंक लाकर दिखाओ।''

सुबह अपने विद्यालय के लिए जाता और दोपहर में आने के बाद अपने बगीचे में बैठकर पढ़ाई करता था। आज भी कुछ सोचते-सोचते बगीचे में आया और पढ़ने बैठ गया। वह आकर बैठा ही था कि उसने सुना बगीचे के एक कोने में कुछ कौए काँव-काँव कर रहे थे। उसने मुड़कर देखा तो पाया कि कुछ कौए एक चिड़िया पर चोंच से प्रहार कर रहे थे। चिड़िया बार-बार बचने का प्रयास कर रही थी परन्तु शैतान शिकारियों की धूर्त दृष्टि उसे ढूँढ ही लेती

अंकित ने दौड़कर सभी कौओं को उड़ाया और चिड़िया को गोदी में उठा लिया। चिड़िया के एक पैर में कांटा चुभ गया था। वह कौओं के प्रहार से घायल भी हो गई थी। उसके कई जगहों से रक्त बह रहा था। अंकित से किसी का बहता खून देखा नहीं जाता था, सो उसकी आँखों से आँसू निकल आए। एक बार रसोई में सब्जी छीलते हुए उसकी माँ की अंगुली में चाकू चुभ गया और खून बहने लगा तब अंकित ने रो-रोकर पूरा घर सिर पर उठा लिया था। अम्मा बार-बार समझाती-'' बेटा, कुछ नहीं हुआ है। मामूली सा, चाकू चुभने से खून निकल आया है, ठीक हो जाएगा।'' पर अंकित था कि मानने को तैयार ही नहीं। उसे यह सब देखकर वे दिन याद आ गए और चिड़िया की हालत देख आखों में आँसू निकल आए। वह चिड़िया को अपने कमरे में ले गया, उसके पैर से कांटा निकाला, फिर उसका घाव गर्म पानी से धोया। घाव पर फिटकरी लगाई। और थोड़ा मरहम लगा कर पट्टी बांध दी। अब चिड़िया असहज महसूस कर रही थी पर लगातार देखभाल करने से पाँच -छह दिन में ही चिड़िया के सारे घाव भर आए।

अब चिड़िया चलने-फिरने लगी थी। माँ के कहने पर अगली सुबह उसने ही चिड़िया को उड़ा दिया। चिड़िया थोड़ी देर आंगन में इधर-उधर टहलती रही, जैसे घर की पहचान कर रही हो। यह देखकर अंकित को बेहद खुशी हुई।

इस घटना को बीते छह माह बीत गए। अंकित सब कुछ भूल गया। परीक्षाएं नजदीक थी। माता-पिता और अध्यापकों के कड़े निर्देश थे इसलिए आज अंकित जल्दी तैयार होकर विद्यालय चला गया। दोपहर में विद्यालय से वापस आकर और पढ़ाई करने बगीचे में चला गया। पहले हिन्दी, फिर अंग्रेजी, गणित.... अपने विद्यालय के

समयानुसार अध्ययन में जुट गया। तभी उसने सुना कि उसके पीछे कुछ चिड़ियाएं बार-बार चीं-चीं कर रहीं थीं, जैसे उसे किसी खतरे से सावधान कर रही हो

पहले तो अंकित का ध्यान नहीं गया लेकिन चीं-चीं की अधिक आवाज बढ़ने पर और चिड़िया के बार बार उसका ध्यान बंटाने पर उसने मुड़कर देखा। उसने देखा कि कुछ दूरी पर एक काला साँप तेजी से उसकी ओर बढ़ रहा था। अंकित उसे डराने भर के लिए लाठी लेने दौड़ा। अपना वार उल्टा देख साँप तेजी से वापस लौट गया। तब अंकित की दृष्टि एक ओर बैठी चिड़िया पर गई। उसने चिड़िया को पहचान लिया। यह वही चिड़िया थी। उसने चिड़िया को गोदी में उठा लिया और बार-बार चिड़िया का धन्यवाद दिया। अगले दिन यह बात अंकित ने अपने विद्यालय में अपने शिक्षकों व मित्रों को बताई। सभी उसके इस कार्य से खुश हुए। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने उसके इस कार्य के लिए सम्मानित किया। उसे सम्मानित होता देख माता-पिता को गर्व महसूस हुआ। विद्यालय के प्राध्यापक महेशचन्द्र गौतम ने अंकित से मंच पर आकर दो शब्द कहने को कहा। उसने अपने गुरुजनों व मित्रों को सम्बोधित करते हुए कहा- ''हमें पशु-पक्षियों के साथ प्यार से पेश आना चाहिए। इसलिए नहीं कि इससे हमारा मनोरंजन होगा इसलिए भी नहीं कि उनकी सहायता से हमारी प्रशंसा होगी, सम्मान या पुरस्कार मिलेगा बल्कि इसलिए कि यह हमारे मनुष्य होने का परिचय है, हमारा कर्त्तव्य है, धर्म है। यह हमारा स्वभाव बनना चाहिए। दादाजी बताते हैं- शिकारी द्वारा क्रोंचों के जोड़े में से एक को मरते देख ही तो वाल्मीकि के मुख से पहली कविता फूट पड़ी थी जो बाद में रामायण जैसे महाकाव्य को लिखने का कारण बनी और राजकुमार सिद्धार्थ के मन में अपने चचेरे भाई देवदत्त के द्वारा घायल हंस को बचाने के लिए राज दरबार तक न्याय की लड़ाई लड़ने की कहानी भी तो हमने पड़ी है अपनी पाठ्यपुस्तक की कविता 'माँ कह एक कहानी में।' यही सिद्धार्थ गौतम बुद्ध बने जिन्हे हम भगवान जैसा मानते हैं। पशु-पक्षी भी प्यार की भाषा समझते हैं। वे भी उपकार का बदला चुकाना जानते हैं। यह भी हमारी भांति प्रकृति के बड़े ही समाज के एक अंग हैं।'' और उसने अपने साथ घटित प्रसंग कह सुनाया। वहाँ बैठे अभिभावकों व सभी छात्रों की आँखों में आँसू छलक आए।

● अलीगढ़ (उ.प्र.)

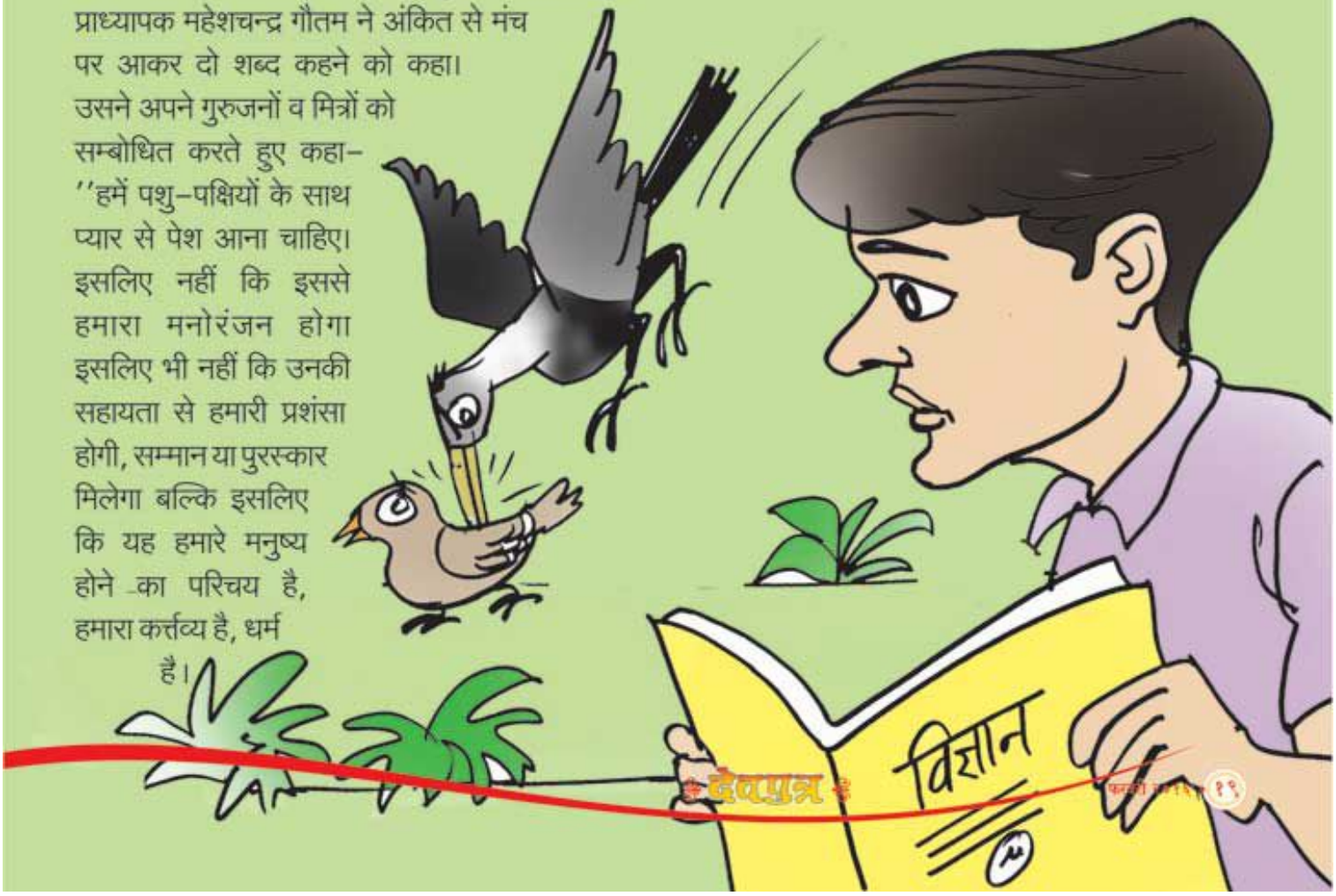

२६ फरवरी : पुण्यतिथि

कौन हैं ये?

- उन्होंने सशस्त्र क्रांति का अलख जगाया देश से परदेश तक।
- इग्लैण्ड में बंदी हुए तो जिस जहाज पर भारत लाए जा रहे थे उसके शौचालय की छोटी सी खिड़की से कूद पड़े नंगे बदन उफनते समुद्र में, उसे चीरते हुए जा पहुँचे फ्रांस के तट पर स्वातंत्र्य की चाह में।
- दो-दो आजन्म कारावास की सजा मिली एक ही जन्म में।
- दिनभर कठोर यातनाएं सह कर कोल्हू के बैल बने तेल निकालते, रस्सी बनाने हेतु रेशा कूटते और रात को अन्डमान की काल कोठरी की दीवारों पर कोयले से क्रांति काव्य के अंगारों को शब्द बनाते।
- वह काव्य कण्ठस्थ कर सुरक्षित किया जो क्रांति की गीता बना। वे सशस्त्र क्रांति के पुरोधा बने।
- राष्ट्र ने उन्हें स्वातन्त्र्य वीर कहा।
- २६ फरवरी को सदा के लिए सो गए वे भारत माँ की गोद में स्वतंत्र भारत में भी अशांत मन से।

(उत्तर इसी अंक में)

अष्टांक-३

देवांशु वत्स

४		९		६		५		
	४४		४३		४७	७	३६	६
६			२	७			३	१
	४४		३८		४३	८	३५	
९	४			५	७			३
	४२	८	३८		३१	२	३१	७
	९	४	६		८	३		
	४२	१	३७		४३		३७	४
८	२			३	४		१	५

खेलने के नियम

खड़ी और आड़ी पंक्तियों में १ से ९ तक के अंक आने चाहिए। रंगीन वर्गों में लिखी संख्या उसके चारों ओर बने आठ खानों में लिखी संख्याओं का कुल जोड़ है। पहले से लिखे हुए अंक बदले नहीं जा सकते।

हमारे राज्य पुष्प

नागालैण्ड और हिमाचल प्रदेश का राज्य पुष्पः बुरान्स

डॉ. परशुराम शुक्ल

लाल रंग का फूल निराला,
भारत में मिल जाता।
चीन और नेपाल आदि से,
इसका गहरा नाता।
हिम पर्वत के ऊँचे जंगल,
में यह पाया जाता।
सर्दी कठिन सहन कर सकता,
ओस पड़े मर जाता।
सूरज की किरणें भी घातक,
हिम भी नहीं सुहाता।
ऊँचे वृक्षों के नीचे यह,
दोनों से बच जाता।
आते ही मौसम बसन्त का,
फूल सदा खिल जाता।
अपने लाल रंग से सारा,
यह जंगल दहकाता।
सुन्दरता के कारण इसको,
सारा जग अपनाता।
इसके साथ-साथ ही इसके,
संकर फूल उगाता।

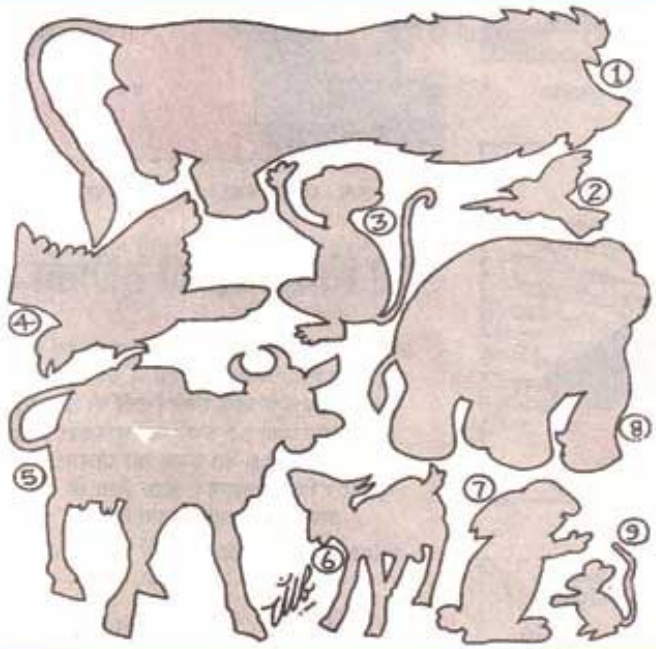

• भोपाल (म.प्र.)

परछाईं ढूंढें

चांद मो. घोसी

नन्हे मित्रो, यहां हमने कुछ जीवों को परछाइयां दी हैं। क्या आप बता सकते हैं कि कौन-सी परछाई किस जीव की है?

विकास पथ पर निरंत

“अगर सही नेतृत्व हो, नीति स्पष्ट हो, नीयत साफ हो, इरादे नेक हों, दिशा निर्धारित हो, मकसद पाने का इरादा हो तो बीमारू राज्य भी प्रगतिशील राज्य बन सकता है। इसका उत्तम उदाहरण शिवराज जी, उनकी टीम और मध्यप्रदेश ने दिखाया है।”

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
(ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट, इंदौर में उद्बोधन)

“प्रदेश का विकास केवल हमारी प्रतिबद्धता ही नहीं, नागरिकों के लिए किया जाने वाला सेवाकर्म भी है।
हमारा विश्वास है कि हम प्रदेश में सहभागी विकास का एक ऐसा तंत्र विकसित कर सकेंगे जो हमें देश का अग्रणी राज्य बनाएगा।”

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

- प्रदेश, देश में सबसे तेज गति से बढ़ते राज्यों में एक, विकास दर दो अंकों में, वर्ष 2014-15 में सकल राज्य घरेलू विकास दर 10% से अधिक.
- पिछले चार वर्ष में कृषि विकास दर औसत 20% रही, दुनिया में सर्वाधिक.
- वर्ष 2014-15 में कृषि उत्पादन रिकार्ड 456 लाख मीट्रिक टन.
- लगातार तीन साल से कृषि उत्पादन के लिए राष्ट्रीय कृषि कर्मण पुरस्कार.
- पिछले एक दशक में सिंचाई क्षमता 7.5 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 36 लाख हेक्टेयर.
- प्रदेश की पहली नदी जोड़ो योजना- नर्मदा-क्षिप्रा सिंहस्थ लिंक योजना पूर्ण. नर्मदा-मालवा गंभीर लिंक योजना का कार्य जारी, निर्मित होगी 50 हजार हेक्टेयर सिंचाई क्षमता.
- प्रदेश की उपलब्ध विद्युत क्षमता पिछले दस साल में 4 हजार मेगावॉट से बढ़कर हुई 15,500 मेगावॉट, 24 घंटे विद्युत आपूर्ति से ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़े रोजगार के अवसर.
- नवीन और नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी, 1600 मेगावॉट क्षमता स्थापित, नीमच में 130 मेगावॉट का एशिया का सबसे बड़ा सोलर प्लांट स्थापित, 750 मेगावॉट का विश्व का सबसे बड़ा सोलर प्लांट के साथ, 3000 मेगावॉट क्षमता के कार्य निर्माणाधीन.
- उद्योगों में निवेश दस साल में ₹ 53,382 करोड़ से बढ़कर हुआ ₹ 1,14,467 करोड़.

एक दशक विश्वास का - प्रदेश के वि

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

र अग्रसर मध्यप्रदेश

- प्रदेश की 95% सड़कों का उन्नयन, 62 हजार किलोमीटर सड़कों का निर्माण, 14,800 बसाहटें ग्रामीण सड़कों से जुड़ी.
- एक करोड़ 64 लाख बच्चों का शाला में हुआ नामांकन, हर बच्चे तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच, बारहवीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर 10 हजार विद्यार्थियों को मिले लेपटॉप.
- आदिवासी वर्ग के विद्यार्थियों ने कक्षा 12 के साथ-साथ राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा द्वारा IIT/NLIU/Medical में प्रवेश प्राप्त कर गुणवत्ता की पहचान बनाई. राज्य सरकार इन विद्यार्थियों का समस्त शैक्षणिक व्यय का भुगतान कर रही है.
- आदिवासी विद्यार्थियों को स्नातक योग्यता उपरान्त IAS परीक्षा की तैयारी हेतु दिल्ली में कोचिंग की सुविधा तथा विदेश में अध्ययन हेतु चयनित विद्यार्थियों को समस्त शैक्षणिक शुल्क का भुगतान राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है.
- महिला सशक्तिकरण के नये प्रयास, पंचायतों, नगरीय निकायों में 50% आरक्षण, संविदा शिक्षक में 50% और पुलिस की नौकरियों में 30% आरक्षण, बेटी बचाओ अभियान संचालित.
- लाड़ली लक्ष्मी योजना में 21 लाख कन्याओं को मिलेगी जीवन के हर पड़ाव पर मदद.
- मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना में तीन लाख 57 हजार से अधिक जरूरतमंद कन्याओं के विवाह सम्पन्न.
- बाल विवाह के विरुद्ध ''लाड़ो'' अभियान संचालित, 70 हजार से अधिक विवाह रोकने में सफलता.
- मातृ मृत्यु दर में 114 बिन्दुओं की गिरावट, मातृ मृत्यु दर 335 प्रति लाख प्रसव से घटकर अब हुई 221, राष्ट्रीय औसत से अधिक गिरावट.
- लिंगानुपात पिछले दशक में 919 से बढ़कर अब हुआ 933 .
- शिशु मृत्यु दर 76 से घटकर 54 हुई, गिरावट की दर राष्ट्रीय औसत से अधिक.
- छात्रवृत्ति तथा अन्य शासकीय योजनाओं का लाभ सीधे हितग्राहियों के बैंक खाते में.
- युवाओं को उद्योग और व्यवसाय के लिए विभिन्न योजनाओं से अनुदान और ऋण 51 हजार से अधिक युवा लाभान्वित.
- 20 हजार लघु और सूक्ष्म उद्योग स्थापित.
- देश का पहला राज्य जिसमें लोक सेवा गारंटी अधिनियम में 23 विभाग की 163 सेवायें समय में मिलने की गारंटी. इसमें 102 सेवाएँ ऑनलाइन हो गयी हैं.
- डिजिटल मध्यप्रदेश ई-टेण्डरिंग, ई-पेमेंट, ई-पंजीयन, ई-स्टांपिंग, ई-साइन जैसे नवाचार, छात्रवृत्तियों, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की राशि हितग्राहियों के बैंक खातों में ट्रांसफर, पारदर्शी प्रशासन.
- सीएम हेल्पलाइन- सरकार और नागरिकों के बीच की दूरी सिर्फ एक फोन काल पर, जन शिकायतों का त्वरित और समाधानकारक निराकरण, 60 लाख काल के दिये गये जवाब.
- जन धन योजना अंतर्गत लक्ष्य प्राप्त करने वाला प्रथम राज्य (बड़े राज्यों की श्रेणी में), 1.54 करोड़ परिवारों के पास कम से कम एक बैंक खाता.

R.O. No. D-77833

कास का

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2015

(पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्मशताब्दी वर्ष)

सुन्दर सुन्दर भाई

कविता : डॉ. वेदमित्र शुक्ला 'मयंक'

दीना ज्यों कक्षा में आए
सबने स्वागत किया जोर से,
शीश झुकाकर के उसने भी
किया नमस्ते हाथ जोड़ के।
दीना इस कक्षा में पहली
श्रेणी तो लेकर ही आए,
साथ में नेक कर्म से अपने
वो तो सबका आदर पाए।
कक्षा के असफल छात्रों को
वो अध्ययन करवाते थे,
जिनको पाठ पढ़ाने में सब
शिक्षक भी कतराते थे।
कठिन पाठ को सरल बनाकर
दीना ने खूब पढ़ाया था,
दीना ने खूब पढ़ाया था,
इस कारण ही पास हुए सब
दीना सबको भाया था।
दीना के इस कार्य के लिए
सब ने दी बधाई फिर,
सब बच्चों इक सुर में बोलो
"सुन्दर-सुन्दर भाई!" फिर।

● नई दिल्ली

झरना

बाल लेखनी : प्रतिष्ठा द्विवेदी

झरझर झरता पानी।
कल कल करता पानी।
अम्बर से धरती को छूने
मचल रहा है पानी।
पर्वत की चोटी से कूदे
झरझर करता पानी।
कलरव के स्वर में गायन कर
छम-छम उतरा पानी।
गिरता फिर उठकर के चलता
ठहर न सकता पानी।
चलता रहता बहता रहता
राहगीर सा पानी।

● अमरपाटन (म.प्र.)

सही उत्तर

कौन हैं वे?

स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर

कॅरियर दिशा

गणित के क्षेत्र में कॅरियर के उजले अवसर

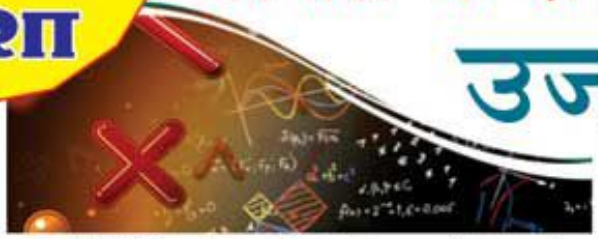

डॉ. जयंतीलाल भण्डारी

'मैथेमेटिक्स' शब्द की व्युत्पत्ति एक ग्रीक शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'अध्ययन के प्रति झुकाव'। मैथेमेटिक्स (गणित) की एक सर्वमान्य परिभाषा देना यद्यपि काफी कठिन है, तथापि इसे मोटे तौर पर संख्याओं तथा प्रतीकों द्वारा अभिव्यक्ति, मात्रा, उनके संबंध, परिचालन एवं मापन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यदि हम साधारण बोलचाल की भाषा में कहें तो गणित संख्याओं तथा उनकी विभिन्न गणनाओं के अध्ययन से संबंधित है। सावधानीपूर्वक विश्लेषण करना तथा तर्क देना गणित के अत्याधिक महत्वपूर्ण कौशल हैं। गौरतलब है कि गणित उतना ही प्राचीन है जितनी कि हमारी सभ्यता। गणित मनुष्य के ज्ञान का एक अत्यधिक उपयोगी तथा आकर्षक शाखा है। इसमें अध्ययन के कई विषय सम्मिलित हैं। गौरतलब है कि गणित एक मान्यताप्राप्त व्यावसायिक कॅरियर है तथा भारत में छात्रों द्वारा कॅरियर के रूप में चुना जाने वाला एक प्रमुख विषय है। भारत में प्राचीन काल से ही गणित की एक सुदृढ़ परम्परा रही है और इसी कारण से यहाँ गणित एवं संबंधित विज्ञान में अध्ययन के विभिन्न केंद्रों की स्थापना की गई है। आज भी भारत में गणित में विश्व स्तर के अनुसंधान करने वाले अनेक संस्थान हैं। गणनाओं में रुचि रखने वाले छात्र बड़ी संख्या में गणित को कॅरियर के रूप में चुनते हैं। गणित तथा संबद्ध क्षेत्र में पाठ्यक्रम करने के उपरांत रोजगार के चमकीले अवसर उपलब्ध हो जाते हैं।

ध्यातव्य है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कदम-कदम पर गणित का उपयोग करता है। गणित लगभग सभी वैज्ञानिक अध्ययनों का एक अनिवार्य अंग है। वैज्ञानिक गणित का उपयोग प्रयोगों की रूपरेखा बनाने, सूचना का विश्लेषण करने, गणित के सिद्धांतों द्वारा अपने निष्कर्ष उचित रूप से व्यक्त करने तथा इन निष्कर्षों के आधार पर सटीक भविष्यवाणी करने के लिए करते हैं। खगोल विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान जैसे विषय तो गणित पर ही निर्भर हैं। सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान सांख्यिकी आदि भी गणित की ही कई अन्य शाखाओं पर निर्भर होते हैं। अर्थशास्त्री आर्थिक व्यवस्था के गणितीय मॉडल तैयार करने के लिए गणित का जमकर उपयोग करते हैं। गणितज्ञ आर्थिक वैज्ञानिक, इंजीनियरी, भौतिकी तथा व्यवसाय आधारित समस्याओं का समाधान करने के लिए गणितीय सिद्धांत, कम्प्यूटेशनल तकनीकों, एल्गोरिदम तथा नवीनतम गणितीय प्रौद्योगिक का प्रयोग करते हैं।

गणित तथा गणित से जुड़े प्रमुख कॅरियर इस प्रकार हैं-

गणितज्ञ- गणितज्ञ एक ऐसा व्यक्ति होता है जिसका अध्ययन अथवा अनुसंधान का मुख्य क्षेत्र गणित होता है। गणितज्ञ तर्क, संख्या आदि से संबंधित विशेष समस्याओं से जुड़े होते हैं। वे अनुसंधान करते हैं और समस्याओं का समाधान करते हैं। गणितज्ञ, गणित के अनसुलझे रहस्यों को उजागर करने का प्रयास करते हैं।

अध्यापन - गणित के अध्यापक की माँग कल भी है और भविष्य में भी रहेगी। क्योंकि गणित पूरी विद्यालयीन शिक्षा में एक मुख्य विषय होता है। यह व्यवसाय भारत में उच्च आय वाला एक रोजगार है। यदि

आप में संख्याओं के प्रति गहरा आकर्षण है तथा पढ़ाने में आपकी रुचि है तो आप अध्यापन के क्षेत्र में भी करियर बना सकते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले गणितज्ञों का अध्यापन तथा अनुसंधान में मिश्रित दायित्व होता है। गणित के क्षेत्र में अध्यापन में कॅरियर के अनेक रास्ते हैं। विद्यालय या महाविद्यालय में नौकरी कर सकते हैं अथवा स्वतंत्र रूप से कोचिंग अथवा ट्यूशन पढ़ाकर अच्छी आजीविका अर्जित कर सकते हैं।

बैंकिंग - वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने तथा प्रधानमंत्री जनधन योजना जैसी योजनाओं के चलते बैंकों में करोड़ों की संख्या में नए खाते खोले जा रहे हैं। इसके चलते बैंक तेजी से अपनी शाखाएँ बढ़ा रहे हैं जिससे इस क्षेत्र में हजारों हजार रोजगार के नए अवसर निर्मित हो रहे हैं।

चार्टर्ड अकाउंटेंट - उदारीकरण तथा वैश्वीकरण के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था के तीव्र विकास ने लेखा तथा वित्त के क्षेत्र में कॅरियर ने अत्यधिक लोकप्रियता अर्जित की है तथा इस क्षेत्र में चार्टर्ड अकाउंटेंट (सी.ए.) का एक अत्यधिक प्रतिष्ठित कॅरियर विकल्प है। चार्टर्ड अकाउंटेंट लेखाकरण, लेखा परीक्षण तथा कराधान में विशेषज्ञ होता है। गणित एवं वाणिज्य में रुचि रखने वाले युवा इस क्षेत्र में चमकीला कॅरियर बना सकते हैं।

साफ्टवेयर इंजीनियर - भारतीय सॉफ्टवेयर इंजीनियरों की न केवल भारत में अपितु वैश्विक स्तर पर भी धूम मची हुई है। वैश्विक आई टी इंडस्ट्री भारतीय सॉफ्टवेयर इंजीनियरों को रोजगार देने के लिए बाहें फैलाए खड़ी है। गौरतलब है कि सॉफ्टवेयर इंजीनियर सॉफ्टवेयर की डिजाइन तैयार कर उसका विकास करते हैं। वे साफ्टवेयर अनुप्रयोग तथा उनकी प्रणाली का सृजन, परीक्षण, विश्लेषण तथा मूल्यांकन करने के लिए कम्प्यूटर विज्ञान तथा गणितीय विश्लेषण के सिद्धांतों को कार्यान्वित करते हैं। सॉफ्टवेयर संगणना, प्रणालियों, सॉफ्टवेयर इंजीनियर संगणना प्रणालियों, सॉफ्टवेयर की संरचना तथा हार्डवेयर की प्रकृति एवं सीमाओं के भी विशेषज्ञ होते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि ये प्रणालियाँ उपयुक्त रूप से कार्य कर रही हैं। इस क्षेत्र में रोजगार की उत्कृष्ट संभावनाएँ हैं।

कम्प्यूटर प्रणाली विश्लेषक - कम्प्यूटर प्रणाली विश्लेषक के लिए सॉफ्टवेयर, अनुसंधान शिक्षा सिक्यूरिटी, बैंकिंग, अर्थशास्त्र, इंजीनियरी, कम्प्यूटर विज्ञान, भौतिकी, तकनीकि शाखाओं आदि में रोजगार के प्रचुर अवसर हैं। अधिकांश प्रणाली विश्लेषक लागत-लाभ एवं निवेश पर लाभ का विश्लेषण तैयार करने के लिए विशिष्ट प्रकार की कम्प्यूटर प्रणालियों जैसे- व्यवसाय लेखाकरण तथा वित्तीय प्रणालियों या वैज्ञानिक एवं इंजीनियरी प्रणाली पर कार्य करते हैं और प्रबंधकों को यह निर्णय लेने में सहायता प्रदान करते हैं कि प्रस्तावित प्रौद्योगिकी, वित्तीय दृष्टि से व्यवहार्य होगी अथवा नहीं।

गौरतलब है कि हमारे देश में दसवीं कक्षा तक गणित एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। ११वीं तथा १२ वीं कक्षाओं में यदि चाहे तो छात्र यह विषय ले सकते हैं। तथापि जो छात्र इंजीनियरी तथा प्रोद्यौगिकी पाठ्यक्रम करना चाहते हैं उन्हें ११वीं तथा १२ वीं में गणित अवश्य पढ़ना होता है। देश की अधिकतर प्रवेश एवं भर्ती परीक्षाओं के लिए मात्रात्मक क्षमता तथा सूचना व्याख्या का गणित एक महत्वपूर्ण घटक होता है। स्नातक स्तर पर गणित बी.एस.सी. के तहत पढ़ाया जाता है। कुछ विश्वविद्यालयों में गणित एक मुख्य अथवा ऑनर्स विषय के रूप में भी पढ़ाया जाता है। हमारे देश में लगभग सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों में गणित से जुड़े पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

भारत में स्नातक स्तर पर गणित की शिक्षा देने वाले दो विश्वस्तरीय संस्थान भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आई.एस.आई.), बैंगलुरु एवं चेन्नई गणित संस्थान (सी.एम.आई.), चेन्नई है। आई.एस. आई. गणित तथा कम्प्यूटर विज्ञान में बी. मैथ्स डिग्री एवं सी.एम.आई. गणित की बी.एससी. डिग्री कोर्स चलाते हैं, जिनमें प्रवेश प्रत्येक वर्ष मई के अंत में भारत के विभिन्न केन्द्रों पर आयोजित की जाने वाली एक लिखित परीक्षा के माध्यम से दिया जाता है। आई.एस.आई. एवं सी.एम.आई. दोनों संस्थान ऐसे छात्रों को भी अपने संस्थान में प्रवेश देते हैं जो इण्डियन नेशनल मैथेमेटिकल ओलंपियाड (आई.एन.एम.ओ.) में उत्तीर्ण होते हैं या किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना (के.वी.पी.वाई.) अध्येता होते हैं।

गणित में विशेषज्ञतापूर्ण पाठ्यक्रम चलाने वाले देश के अन्य प्रमुख संस्थान इस प्रकार हैं-

● औद्योगिक गणित में पाठ्यक्रम पुणे विश्वविद्यालय, पुणे में उलपब्ध है।

● न्यूमेरिकल मैथेमेटिक्स पाठ्यक्रम मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, मदुरै में उपलब्ध है।

● गणितीय अर्थशास्त्र में पाठ्यक्रम देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर में उपलब्ध है।

● अनुप्रयुक्त सांख्यिकी में पाठ्यक्रम मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई में उपलब्ध है।

भारत कं १३५ में भी अधिक विश्वविद्यालय गणित से जुड़े कोर्स चलाते हैं। ये कोर्स गणित विभागों द्वारा चलाए जाते हैं। गणित एवं कम्प्यूटर विज्ञान दोनों के लिए प्रायः एक ही विभाग होता है। कुछ विश्वविद्यालय शुद्ध गणित एवं अनुप्रयुक्त गणित में विशिष्टता प्रदान करते हैं। छात्र भारत में कुछ स्थानों पर चलाए जाने वाले एकीकृत एम.एससी. पीएच डी डिग्री कोर्स के लिए भी आवेदन कर सकते हैं।

एमएससी-पीएचडी कोर्स के लिए देश के प्रमुख संस्थान इस प्रकार हैं-

टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टी.आई.एफ.आर.), मुंबई। लिखित परीक्षा तथा उसके बाद साक्षात्कार के माध्यम से इस संस्थान के पीएच डी पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाता है।

भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आई.आई.एस.ई.आर.) पुणे/ मोहाली/ कोलकाता/ त्रिवेन्द्रम/ भोपला तथा राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा अनुसंधान संस्थान (एन.आई.एस.ई.आर.), भुवनेश्वर में भी गणित में एकीकृत एमएससी डिग्री कोर्स उपलब्ध है। आई.आई.एस.ई.आर. छात्रों को आई.आई.टी. प्रवेश परीक्षा के आधार पर प्रवेश देता है। जबकि एन.आई.एस.ई.आर. राष्ट्रीय प्रवेश जाँच परीक्षा (एन.ई.एस.टी.) के माध्यम से प्रवेश देता है।

छात्र हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा गणित में चलाए जाने वाले एकीकृत एमएससी पाठ्यक्रम में भी प्रवेश ले सकते हैं। यह विश्वविद्यालय छात्रों को जून के प्रारम्भ में आयोजित की जाने वाली एक लिखित परीक्षा के माध्यम से प्रवेश देता है।

पांडिचेरी विश्वविद्यालय एवं विभिन्न आई.आई.टी. बारहवीं कक्षा के उपरांत गणित में पाँच वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम चलाते हैं।

इन विशेष पाठ्यक्रमों के अलावा सामान्य, शुद्ध एवं अनुप्रयुक्त गणित में भी कम्प्यूटेशनल मैथेमेटिक्स, मैथेमेटिकल स्टेटिस्टिक्स तथा मैथेमेटिकल, अर्थशास्त्र, कम्प्यूटर अनुप्रयोग सहित गणित, औद्योगिक गणित एवं कार्यात्मक गणित के रूप में ऐसे विषयों पर कई कोर्स उपलब्ध हैं।

गणित के दो अन्य अत्याधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र सांख्यिकीय गुणवत्ता नियंत्रण तथा परिचालन अनुसंधान हैं। इस क्षेत्र में कोर्स कराने वाले प्रमुख संस्थान हैं-

● स्वास्थ्य सांख्यिकी में डिप्लोमा कोर्स अखिल भारतीय स्वास्थ्य एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान, कोलकाता में उपलब्ध है।

● सांख्यिकी में दो वर्षीय पी.जे. डिप्लोमा कोर्स बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में उपलब्ध है।

● सांख्यिकी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, मराठवाड़ा में उपलब्ध है।

● मास्टर डिग्री कार्यक्रम चलाने वाले अधिकांश विश्वविद्यालयों में गणित तथा संबंद्ध क्षेत्र में पीएचडी तथा अनुसंधान सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। इनके लिए अनेक स्कॉलरशिप भी उपलब्ध हैं। भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा गणित दूरस्थ शिक्षा पद्धति द्वारा भी पढ़ाया जाता है।

● इन्दौर (म.प्र.)

(लेखक देश के ख्यात कॅरियर मार्गदर्शक एवं कॅरियर दिशा मिशन के प्रणेता है।

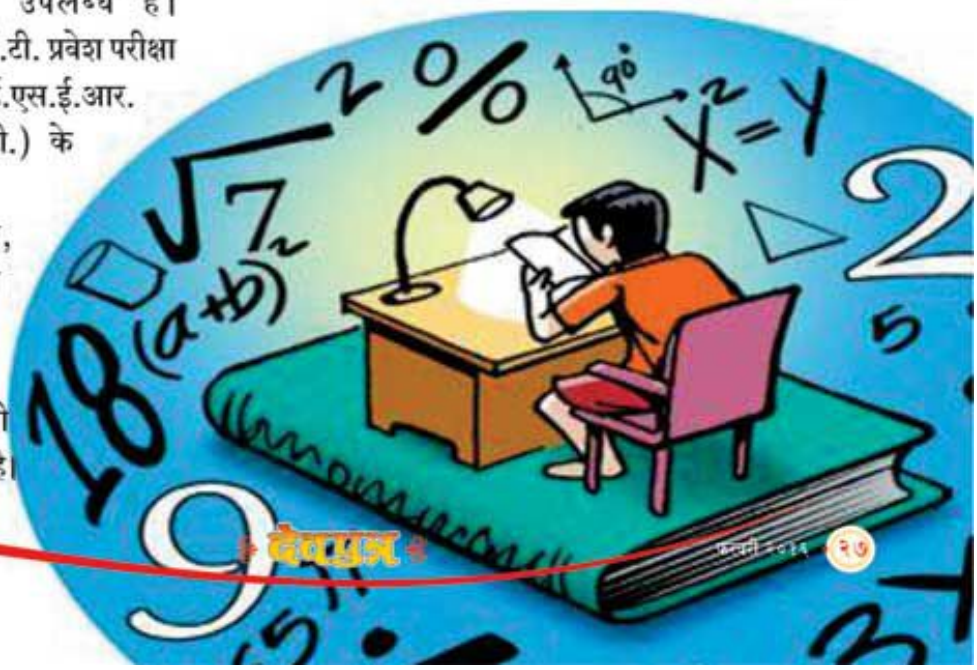

वर्ग पहेली

गोविंद प्रसाद श्रीवास्तव 'हंस'

संकेत

बायें से दायें–

०१) सूर्य देव के सारथी
०३) शांति...चैन
०४) ब्रह्मा के मुख, वेद, वर्णाश्रम
०५) षड़यंत्र, चलने की क्रिया
०६) गणेश का एक नाम
०७) बाण रखने का थैला
०८) कमरा
१०) चक्कर
११) दक्ष, प्रवीण
१२) गोर्की की रचना

ऊपर से नीचे–

०१) अनुसरण करना
०२) मजबूरन, जबरदस्ती से
०३) एकाएक, सहसा
०६) अदल–बदल करना
०९) सर्वश्रेष्ठ दान

(उत्तर इसी अंक में)

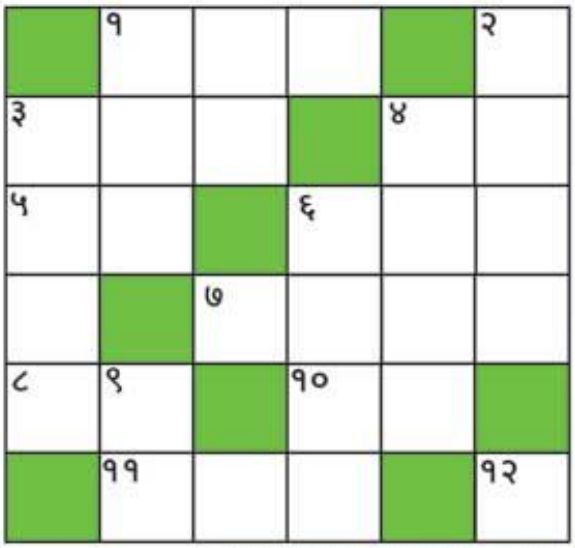

आपकी पाती

● **उज्ज्वल गुप्ता, पिछोर (म.प्र.)**

इन्द्रधनुषी रंगों में रंगी,
रंग, रूप में लगती परी।
कविता, कहानी, लेखों से सजी,
हरदम रहती ज्ञान से भरी।
बच्चे–बूढ़ों को ये लुभाती,
सबके मन को है हर्षाती।
महिने भर में आती है,
ज्ञान हमारा बढ़ाती है।
इसको हमेशा हम पत्र लिखते,
सब इसके आगमन का इंतजार करते।
देवपुत्र को करते अभिवादन,
इसी तरह करें इसका संपादन।

● **अमित थवाईत, बिर्रा (छ.ग.)**

देवपुत्र वर्तमान में प्राचीन भारतीय संस्कृति को जीवित रखने का कार्य कर रही है। आपकी पत्रिका में छपी सभी कहानियाँ प्रेरणादायक होती है। इसमें आपकी चौपाल को पुनः देखने की इच्छा होती है। वर्ग पहेली के शुभारंभ के लिए हार्दिक बधाई।

● **अमृत आँजना, आकासौदा (म.प्र.)**

मैं देवपुत्र का पाठक हूँ इसे में ८ साल से पढ़ रहा हूँ। इसमें अच्छी–अच्छी कहानियाँ, कविता, चुटकुले, ज्ञान पूर्ण सामग्री आती है। देवपुत्र पत्रिका अपने में अनूठी पत्रिका है। इसमें मानसिक तथा बौद्धिक शक्ति का विकास होता है। देवपुत्र पत्रिका के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

सबसे अच्छा काम!

चित्रकथा - देबांशु बत्स

जानो पहचानो

- अपने नाम के अनुरूप वे कभी भी अंग्रेजों के हत्थे न चढ़े।
- यहाँ तक कि जब अल्फ्रेड पार्क में अकेले घिर गए अंग्रेजी सिपाहियों से। पिस्तौल की हर गोली से भारत माता को अंग्रेजों के रक्त की अंजलि चढ़ाई। आखरी गोली से अपने रक्त का कुंकुम अर्पित कर दिया माँ के चरणों में, प्राणों के दीप के साथ।
- अंग्रेज इतने डरते थे भाभरा के इस सिंह से कि उनकी मृत देह को भी अनेक गोलियों से छलनी करके ही साहस कर पाए उन्हें छूने का।
- स्वतंत्रता का यह महान योद्धा, क्रातिकारियों का महान नायक अभी भी सोया है। प्रयाग (इलाहाबाद) की तीर्थ भूमि की पवित्रता को और भी बढ़ाते हुए।
- उनका बलिदान हुआ था इसी माह की २७ तारीख को।
- विस्तार से जानिए यह रोमांचक इतिहास अपने बड़ों से पूछ कर।

सही उत्तर

अष्टांक-३

४	७	९	३	६	१	५	२	८
२	४४	३	४३	८	४७	७	३६	६
६	८	५	२	७	९	४	३	१
३	४४	७	३८	२	४३	८	३५	९
९	४	२	८	५	७	१	६	३
१	४२	८	३८	४	३१	२	३१	७
५	९	४	६	१	८	३	७	२
५	४२	१	३७	९	४३	६	३७	४
८	२	६	७	३	४	९	१	५

वर्ग पहेली

	१ अ	रु	ण		२ ब
३ अ	म	न		४ चा	र
५ चा	ल		६ हे	रं	ब
न		७ त	र	९ क	स
८ क	९ क्ष		१० फे	रा	
	११ मा	हि	र		१२ माँ

कहानी : चन्द्रभान टोण्डे

जल्दबाजी का पश्चाताप

गरीबी से परेशान एक युवक अपना जीवन समाप्त करने के लिए नदी पर गया। लेकिन वहाँ एक साधु ने उसे ऐसा करने के लिए मना कर दिया।

साधु ने युवक की परेशानी को सुनकर कहा– ''मेरे पास एक विद्या है, जिससे जादुई घड़ा बन जाता है। तुम जो भी इस घड़े से मांगोगे, वह तुम्हारे लिए उपस्थित हो जाएगा। परन्तु जिस दिन यह घड़ा फूट गया, उसी समय जो कुछ भी इस घड़े ने दिया था, वह सब अदृश्य हो जाएगा।''

साधु ने आगे कहा– ''अगर तुम दो वर्ष तक मेरे आश्रम में रहो, तो यह घड़ा मैं तुम्हें दे सकता हूँ। और अगर पांच वर्ष तक आश्रम में रहो, तो मैं यह घड़ा बनाने की विद्या तुम्हें सिखा दूँगा। बोलो,''तुम क्या चाहते हो?''

युवक ने कहा– ''महाराज! मैं तो दो साल ही आपकी सेवा करना चाहूँगा। मुझे तो जल्द से जल्द यह घड़ा ही चाहिए। मैं इसे बहुत सम्भाल कर रखूँगा, कभी फूटने ही नहीं दूँगा।'' इस तरह दो वर्ष आश्रम में सेवा करने के बाद युवक

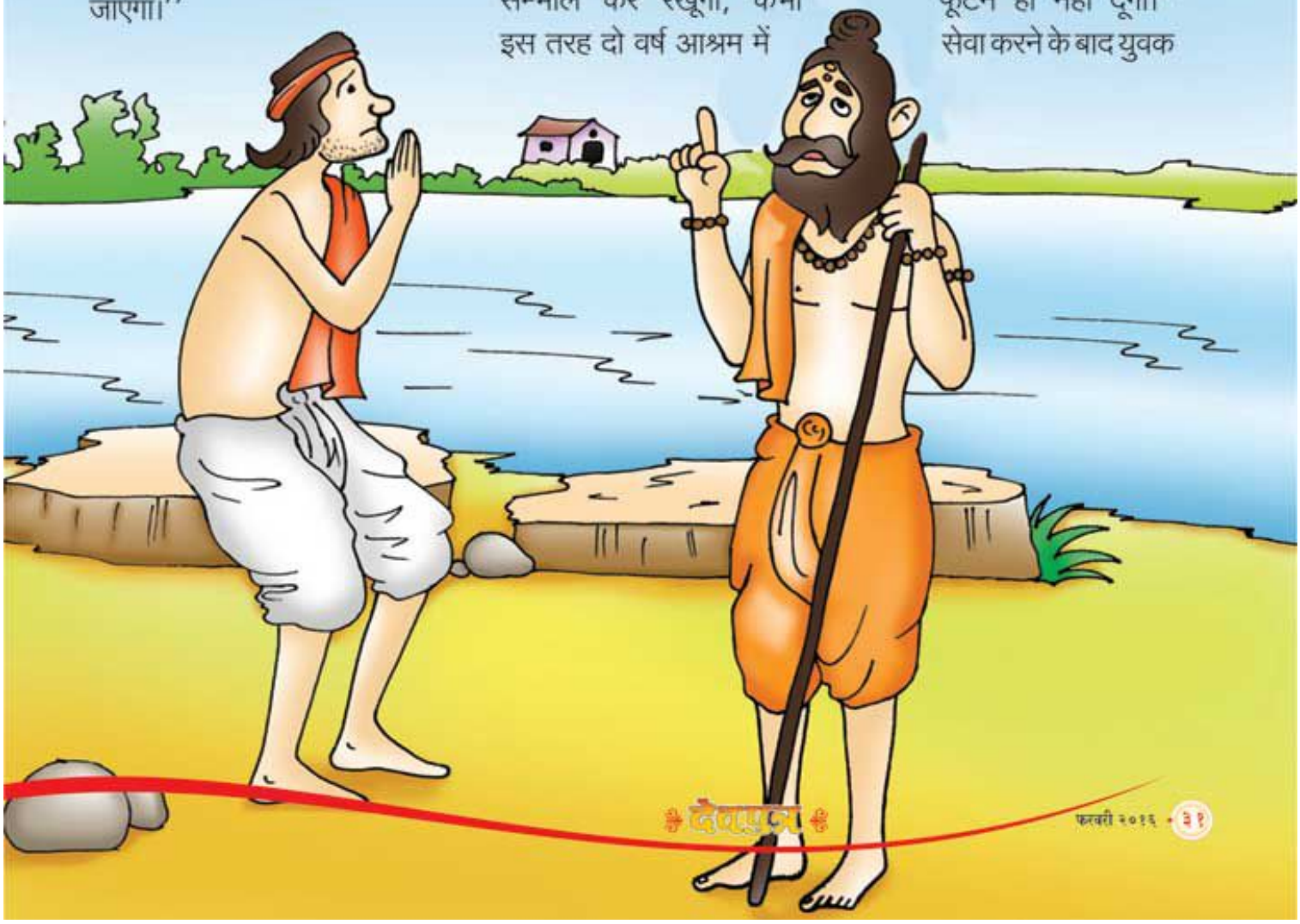

ने वह जादुई घड़ा प्राप्त कर लिया। और उसे लेकर अपने घर आ गया।

उसने घड़े से हर इच्छा पूरी करनी चाही और वह पूरी होती गई। घर बनवाया, महल बनवाया, नौकर-चाकर मांगे। वह सभी को अपनी धाक व वैभव-सम्पदा दिखाने लगा। उसने शराब पीना शुरू कर दिया।

एक दिन वह जादुई घड़ा सर पर रखकर नाचने लगा। अचानक उसे ठोकर लगी और घड़ा गिरकर फूट गया। घड़ा फूटते ही सभी कुछ छू-मन्तर हो गया। अब युवक पश्चाताप करने लगा कि काश मैंने जल्दबाजी न की होती और घड़ा बनाने की विद्या सीख ली होती तो आज मैं फिर से कंगाल न होता।

ईश्वर हमें हमेशा दो रास्ते देता है एक आसान, जल्दीवाला और दूसरा थोड़ा लम्बे वाला लेकिन गहरे ज्ञान वाला। यह हमें चुनना होता है कि हम किस रास्ते पर चलें।

● बैहाकापा (छ.ग.)

पुस्तक परिचय

शीर्ष पर भारत - डॉ. विकास दवे

उथली आलोचनाएं कर देना बड़ा आसान है आज सब दूर ऐसा वातावरण ही अधिक है लेकिन इससे फैलते नकारात्मकता के विषाणु हमारे आत्मविश्वास को कमजोर करते हैं और विकास के पथ की भ्रामक बाधाएं बनते हैं। सोने की चिड़िया कहा जाने वाला भारत आज विश्व मण्डल पर सोने का गरुड़ बनकर आरूढ़ होने को तैयार हो रहा है। क्या प्रमाण हैं इस भारत के इस भविष्य की साकारिता के? डॉ. विकास दवे ने इस बहुरंगी पुस्तक में तथ्यों, तर्कों और प्रमाणों की शोधपूर्ण और रोचक प्रस्तुति से सिद्ध किया है। पुस्तक जिसका प्रत्येक पृष्ठ मानो भारत को शीर्ष पर ले जाती सीढ़ी का जीवन्त चित्र है। सम्पूर्ण कृति चित्रमय एवं बहुरंगी है।

मूल्य १६० रु.

प्रकाशक- संदर्भ प्रकाशन जे-१५४ हर्षवर्धन नगर, माता मंदिर भोपाल (म.प्र.)

बाल साहित्य जगत के नवनक्षत्र, प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं बालमन पारखी श्री राजेन्द्र कोचला 'अम्बर' के नन्हे मुन्ने बच्चों को दो काव्योपहार

चंदा नाचे धीरे धीरे

मनोरंजन, प्रेरणा एवं शिक्षा की गंध से महकती ३४ बाल कविताएं

मूल्य ५० रु.
पृष्ठ ४८

जय हो मेरे देश की

राष्ट्रीयता, नैतिकता, जीवनमूल्यों का बोध कराती ३३ बाल कविताएं

मूल्य ५० रु.
पृष्ठ ४८

प्रकाशक- संदर्भ प्रकाशन जे-१५४ हर्षवर्धन नगर, माता मंदिर भोपाल (म.प्र.)

हास्य व्यंग्य के भारत प्रसिद्ध हस्ताक्षर कविवर प्रदीप 'नवीन' की बच्चों को अनमोल भेंट

२० कविताओं और ९ गीतों का हास्य व्यंग्य, बालमन और राष्ट्रीय परिस्थितियों पर चुटीली रचनाओं का महकता गुलदस्ता

मूल्य १०० रु.
पृष्ठ ४८

प्रकाशक- पार्वती प्रकाशन ७३-ए, द्वारिकापुरी, इन्दौर ४५२००९ (म.प्र.)

अंग बड़े अनमोल

कविता : घमण्डीलाल अग्रवाल

आओ, बच्चो आओ-आओ,
अपने तन से मेल बढ़ाओ।
बातें हरदम ऊंच-नीच की,
सोचा करता है दिमाग ही।
दृश्य मनोहर आंख दिखाएं,
कानों से बातें सुन पाएं।
खुशबू अथवा बदबू भारी,
सूंघा करती नाक बेचारी।
देना सभी जीभ को दाद,
चीजों का बतलाए स्वाद।

दांत चबाया करते भोजन,
भोजन का तब होता पाचन।
हाथ समूचा बोझ उठाते,
शाबासी औरों से पाते।
पैरों से चल मंजिल पाते,
जीवन का उपवन महकाते।
तन की रखना सदा सफाई,
सिर्फ इसी में निहित भलाई।
खुद जानो, सबको बतलाना,
अंगों का अनमोल खजाना।

● गुड़गांव (हरियाणा)

कहानी : डॉ. फकीरचंद शुक्ला

चमत्कार

चिरंजीत जब शाला से घर लौटा तो अपने अमेरिका रहने वाले चाचा जी को आया देखकर हैरान हो गया।

''आ भाई मेरे शेर पुत्तर...तूने तो बहुत देर लगा दी शाला से लौटने में। कहते हुए चाचाजी ने उसे गले से लगा लिया।

चिरंजीत को अपनी आंखों पर जैसे विश्वास नहीं हो रहा था ना पत्र, न कोई फोन। चाचाजी अचानक कैसे आ गए।

''अरे! ऐसे अपलक मेरी और क्या देख रहा हैं? ना नमस्ते, न सत सिरी अकाल...''

चिरंजीत जैसे शर्मिन्दा हो गया। तब उनके पांव छूकर कहा उसने–''चाचा जी, आपको अचानक आया हुआ देखकर...''

''हैरान हो गया न?'' चाचा जी ने हँसते हुए उसकी बात को बीच में ही काटते हुए कहा– ''एक मित्र भारत आ रहा था। मैंने सोचा मैं भी पन्द्रह दिन के लिए घूम जाऊँ देश की माटी की सुगंध खींच लाई बस।''

इतनी देर में उसकी माता जी रसोई घर से आ गई।

''आते ही लग पड़ा चाचा जी को परेशान करने।''

''नहीं नहीं यह मुझे कहां परेशान कर रहा है। यह तो मुझे अचानक आया देख जैसे कहीं खो गया है।'' एक पल रुककर चाचाजी ने चिरंजीत से कहा– ''जा, भीतर से मेरा काला बैग उठा ला। तुझे पता तो चले मैं तुम्हारे लिए क्या कुछ लाया हूँ।''

चिरंजीत झट से जाकर कमरे में से उनका बैग उठा लाया। वह मन ही मन सोच रहा था कि न जाने किस प्रकार के खिलौने होंगे। यहाँ तो शायद किसी के पास भी उस तरह के न हो। हो सकता है राकेट या जहाज हो जो रिमोट कंट्रोल से उड़ता हो।

मगर जब चाचा जी ने बैग खोला तो चिरंजीत को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसे आसमान से जमीन पर पटक दिया हो।

चाचा जी तो उसके लिए पुस्तकें लाए थे।

''चाचाजी! आप खिलौने नहीं लाए?'' कहते हुए उसका मन भर आया।

खिलौना ने तो तू जितने चाहेगा तुम्हें यहाँ से ले देंगे मगर इस प्रकार की ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें तुम्हें यहाँ आसानी से नहीं मिलेंगी।'' और चाचाजी ने एक पुस्तक खोलकर उसकी ओर बढ़ा दी–''यह पुस्तक देख...इस में चित्रों के साथ सारी जानकारी है कि किस प्रकार अन्तरिक्ष में जाया जाता है।''

लेकिन चिरंजीत को उसमें कोई रुचि न थी।

तभी उसकी माँ उसके लिए दूध का गिलास ले आई– '' ले, पहले दूध पी ले...।''

''माँ! चाचा जी तो पुस्तकें लाए हैं। खिलौने तो कोई नहीं...''

''किताबें देखकर तो इसकी जैसे सांस घुटने लगती है।'' माँ ने उसकी बात को बीच में ही टोकते हुए कहा– ''पढ़ाई का तो इसे रत्तीभर भी शौक नहीं। पिछली बार भी मुश्किल से पास हुआ था।''

''रहने दीजिएगा...आप तो यूं ही मेरे प्यारे भतीजे की शिकायत करने लगी हैं...।'' यह तो मेरा सबसे भला बेटा है...ले फटाफट दूध पी ले'' उन्होंने कहा– ''तुम क्या समझते हो मैं तुम्हारे लिए सचमुच खिलौने नहीं लाया?''

''आप खिलौने लाए हैं, चाचा जी!'' चिरंजीत खुशी से एकदम खिल उठा था।

''हाँ भाई लाया हूँ...मेरे अटैची में पड़े हैं। एक रेलगाड़ी है तथा एक हवाई जहाज...दोनों रिमोट कंट्रोल से चलते हैं। मगर इन्हें कुछ देर के लिए धूप में रख लेना।''

''धूप में क्यों, चाचा जी?''

''भाई, इनमें सोलर सेल लगे हैं और ये सूरज की रोशनी से चलते हैं।''

चिरंजीत का मन बल्लियों उछल

पड़ा। चाचा जी उसके साथ कमरे में आ गए और अपने अटैची में से खिलौने निकाल कर उसे दे दिए।

शाम को हर रोज चिरंजीत चाचा जी को घुमाने ले जाया करता । पांच सात दिन में ही वह चाचा जी से घुलमिल गया था।

एक दिन चाचा जी ने बातों–बातों में ही उससे पूछ लिया– ''भतीजे! एक बात तो बता ये तेरे माता–पिता अक्सर शिकायत करते है कि तू ढंग से पढ़ाई नहीं करता। क्या यह सच है?''

प्रत्युतर में चिरंजीत ने कहा तो कुछ नहीं मगर आंखें झुका लीं।

''भतीजे! अगर तुम पढ़ाई नहीं करोगे तो न तुम्हें कोई प्यार करेगा और न ही कुछ लेकर देगा।''

''चाचा जी मैं पढ़ता तो बहुत हूँ पर....''

''पर क्या बेटे... रुक क्यों गए...बोलो न...''

''चाचा जी जब भी मैं पढ़ने लगता हूँ मुझे कुछ समझ ही नहीं आता।''

''अच्छा एक बात तो बता'' चाचा जी ने उसकी बात को बीच में ही काटते हुए पूछा– ''कहीं तुम्हारे साथ ऐसा तो नहीं होता कि जब भी तुम पढ़ने लगते तो तुम्हारा सिर भारी भारी लगने लगता है तथा जम्हाई आने लगती है...''

''हाँ चाचा जी! ऐसा ही होता है''

''और जब कक्षा में शिक्षक कुछ समझा रहे हो तो तुम्हारा मन कहीं और ही भटकने लगता है...''

''हाँ चाचा जी! ऐसा तो प्रायः होता है।''

''ओह हो...'' चाचा जी ने माथे पर हाथ मारते हुए कहा– ''तब तो तुम्हारे साथ भी वही सब कुछ हो रहा है...''

''क्या हो रहा है चाचा जी?'' चिरंजीत हैरान हो उनकी ओर देखने लगा।

मगर चाचा जी कुछ नहीं बोले। चुपचाप एकटक आसमान की ओर देखने लगे।

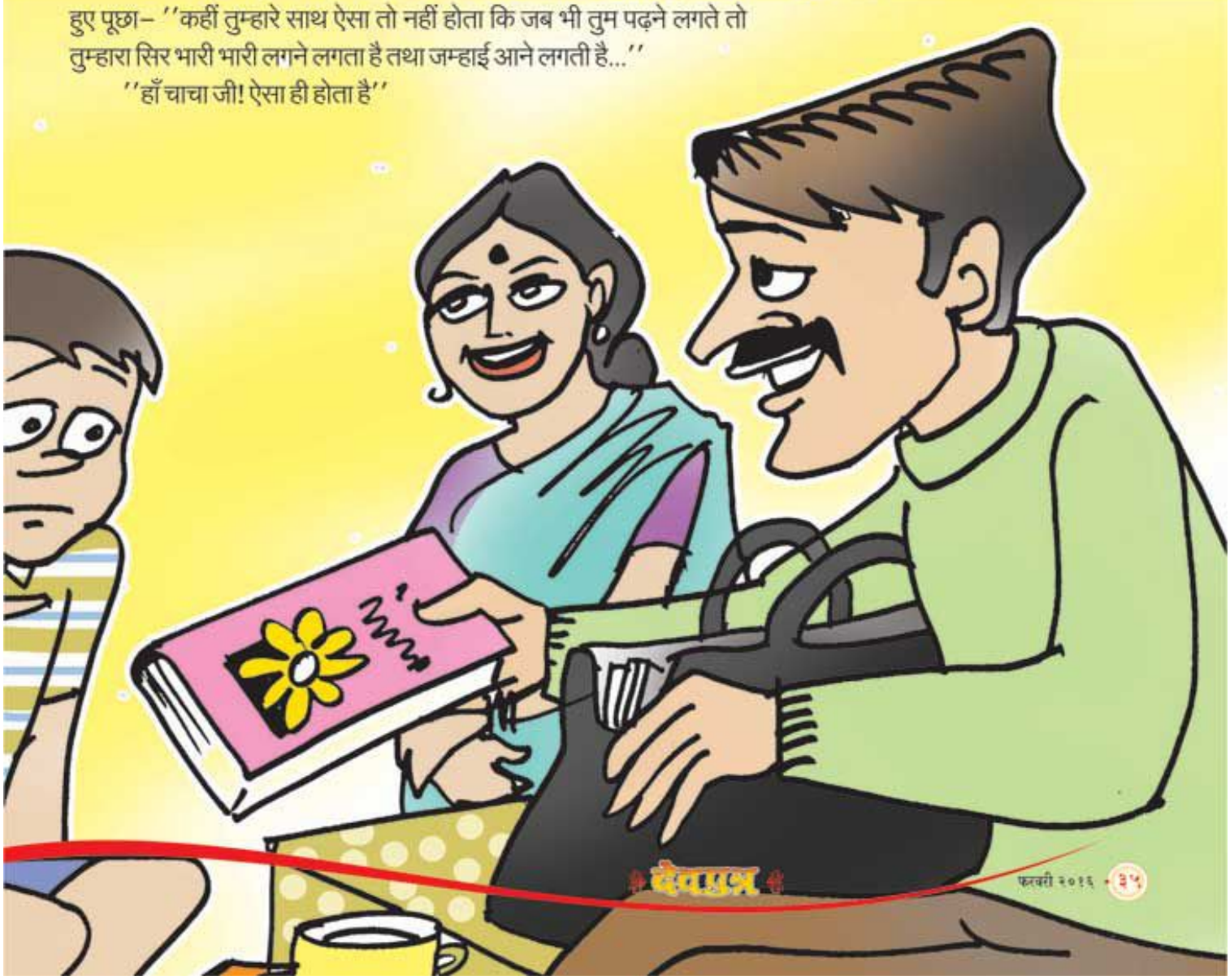

''बताओ न चाचा जी?''

मगर उन्होंने होंठों पर अंगुली रखकर उसे चुप रहने का इशारा किया और स्वयं आसमान की ओर देखने लगे।

कुछ पल बाद उन्होंने पूछा– ''भतीजे! एक बात और बता। क्या शाला में तुम्हारा मन करता है कि तुम कालांश छोड़कर कहीं भाग जाओ....''

''हाँ चाचा जी! ऐसा तो कई बार होता है...''

''तब तो बेटे तुम्हारा भी वही इलाज करना पड़ेगा जो मेरा किया गया था।''

''आपको क्या हुआ था, चाचा जी?'' चिरंजीत की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी।

''बेटे! जब मैं अमेरिका पढ़ने गया था तब मेरे साथ भी यह सब कुछ होता था जो तुम्हारे साथ हो रहा है।''

''फिर क्या हुआ, चाचा जी...?''

''मैं बहुत परेशान रहने लगा। अगर अनुतीर्ण हो जाता तो उन्होंने मुझे भारत भेज देना था। मैंने बहुत सारी दवाएं खाई...कई डाक्टरों को दिखाया मगर कोई फायदा न हुआ। तब एक दिन जानते हो क्या हुआ?''

चिंटू ने प्रश्नात्मक दृष्टि से उनकी ओर देखा मगर मुंह से कुछ नहीं कहा।

''परेशान होकर मैंने आत्महत्या करने का मन बना लिया क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि अनुत्तीर्ण होकर नाक कटवाकर भारत लौटूं। जब मैं मरने जा रहा था तो रास्ते में एक अंग्रेज मित्र मिल गया।'' इतना कहकर चाचा जी चुप रह गए।

''फिर क्या हुआ चाचा जी?''

''फिर वह अंग्रेज जबरदस्ती मुझे अपने घर ले गया। मैंने उसे बस कुछ सच–सच बतला दिया। मेरी बात सुनकर वह खिलखिला कर हंसने लगा। मैंने यूं हंसने का कारण पूछा तो वह बोला–''अरे भाई, इस रोग का इलाज डाक्टरों के पास नहीं होता। भूतों से भला डाक्टर छुटकारा दिलवा सकते हैं क्या?''

''मगर चाचा जी भूत–प्रेत नाम की तो कोई चीज नहीं होती? यह तो मात्र हमारा भ्रम है। हमारी विज्ञान वाली पूजा दीदी तो हमें यही सिखाती हैं।''

''हाँ बेटे, मै भी पहले तुम्हारी पूजा दीदी की तरह ही सोचता था। मगर जब से कुछ मेरे साथ घटा है तब तो विश्वास

कविता बनाइए १६

बच्चो! कविता बनाओ स्तंभ में आपकी सुन्दर सुन्दर कविताएं मिलती रहती हैं आइए इसमें एक प्रयोग और जोड़ें। आपको दिए गए चित्र पर चार पंक्तियों की कविता बनाकर तो भेजना ही है। आपकी कविता में ऋतुओं का राजा शब्द भी आना चाहिए। जानते है ऋतुओं का राजा अर्थात् बसंत होता है।

चयनित कविता अप्रैल माह के अंक में प्रकाशित होगी।

करना ही पड़ा।'' एक पल रुककर कहा उन्होंने–''खैर! लम्बी चौड़ी बात क्या करें। वह मित्र मुझे जादू के विशेषज्ञ एक अंग्रेज के पास ले गया। उसने मुझे एक मंत्र लिखकर ताबीज में डालकर वह ताबीज किताबों के बीच रखने के लिए दे दिया।''

''फिर आप ठीक हो गए चाचा जी?'' चिरंजीत को उनकी कहानी का परिणाम जानने की उत्सुकता थी।

''अरे ताबीज ने तो ऐसा जादू किया कि मैं विश्वविद्यालय में प्रथम आ गया और मुझे वहीं पढ़ाने के लिए अवसर मिल गया।

चाचा जी ने चिरंजीत के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा– ''मुझे अभी तक वह मंत्र याद है। कल में तुम्हें ताबीज बनाकर दे दूंगा। मगर एक बात का ध्यान रखना। घर में किसी को भी उस ताबीज के बारे में पता न चले वरना ताबीज का प्रभाव समाप्त हो जाएगा।''

''ताबीज अपनी किताबों वाली अलमारी में रख देना। शुरु–शुरु में तेरे साथ वही सब कुछ होगा जैसे आज तक होता रहा है। मगर तूम हौसले से काम लेना। जब नींद आने लगे तो आँखों पर पानी के छींटे मार लेना क्योंकि अगर तूने एक बार भी हार मानी ली तो भूत जीत जाएगा और जादू का मंत्र बेकार हो जाएगा। बस एक बार भूत हारना शुरु कर देगा तो तुम्हारी जीत अवश्य होगी।''

अगले दिन चाचा जी ने उसे ताबीज थमा दिया। चिरंजीत को तो मानो खजाना मिल गया।

प्रतिदिन की तरह शाम को चिरंजीत और चाचा जी सैर के लिए निकल पड़ते। चाचा जी प्राय उसे सावधान करते रहते कि किस प्रकार भूत का सामना करना है।

...आखिरकार पन्द्रह दिनों के पश्चात् चाचा जी अमेरिका वापस लौट गए।

चिरंजीत की परीक्षा हो गई। घर में किसी को भी विश्वास नही हुआ कि वह उतीर्ण हो जाएगा। मगर जब उसकी प्रथम श्रेणी आ गई तब तो सब चकित रह गए। उसके पिता ने तो यहां तक कह दिया– ''इसने अवश्य नकल की होगी। अगर इस जैसे नालायक की प्रथम श्रेणी आने लग जाए तब तो शिक्षा पद्धति का ही सत्यानाश हो जाएगा।''

''मैंने कोई नकल नहीं की...यह तो चाचा जी''

''क्या चाचा जी...'' पिताजी गुस्से में बोले– ''क्या वे तेरे शिक्षकों को रिश्वत दे गए?''

कविता बनाइए

दिसम्बर २०१५

के चित्र हेतु चयनित कविता

गुंजन करते मदमस्त भौंरे
चटखी कलियां हो गई भौर।
बाग बगीचे, फूल खिले
सुगन्ध बिखेरे चहुं ओर।।

- प्रेम शर्मा 'प्रहरी'
पाली-मारवाड़ (राज.)

चिरंजीत ने तिलमिला कर कहा– ''असली बात का पता नहीं और शिक्षकों को दोष देने लगे।''

''तो फिर सच–सच क्यों नहीं बतलाता कि तुम्हारे जैसा नालायक प्रथम कैसे आ गया? पिताजी का पारा अब भी चढ़ा हुआ था।''

''पहले मुझे भूत ने जकड़ा हुआ था।''

'' क्या कहा, तुझे भूत ने जकड़ा हुआ था?'' और पिताजी जोर जोर से हंसने लगे।

''हाँ, वह भूत मुझे पढ़ने नहीं देता था। चाचा जी मुझे ताबीज बनाकर दे गए हैं।''

''अरे वाह, एक नहला दूसरा दहला। वह अमेरिका में रहकर ताबीज बनाता है! '' पिताजी ने परेशान होकर माथे पर हाथ मारते हुए कहा।

''आपको तो विश्वास नहीं आएगा... मैं अभी दिखाता हूँ और चिरंजीत तुरंत भीतर जाकर पुस्तकों की अलमारी में से ताबीज उठा लाया।

रंग भरो

चांद मो. घोसी

यहां हम ने अपने नन्हे मित्रों के लिए एक चित्र दिया है जो श्वेत-श्याम होने के कारण नीरस लगता है। तो नन्हे मित्रों देर किस बात की, उठाएं अपने रंग तथा ब्रश और बना दे चित्र को रंगीन।

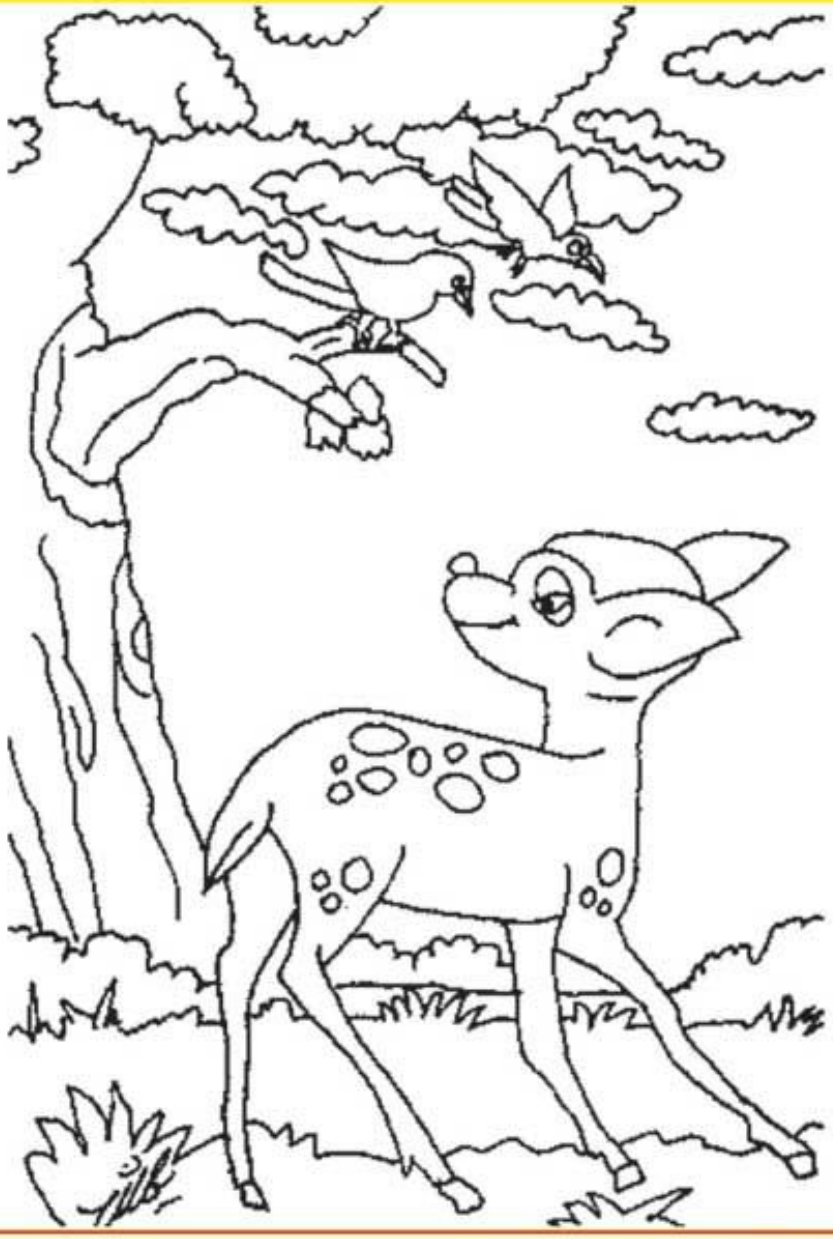

''यह देखो ताबीज'' उसने अपने पिताजी की ओर ताबीज बढ़ाते हुए कहा– ''इसके कारण भूत मेरा पीछा छोड़ गया है।''

''पीछा छोड़ गया है भूत इसका!'' कहते हुए पिताजी ने ताबीज को मरोड़ दिया।

''मेरा ताबीज क्यों तोड़ रहे हो?'' चिरंजीत तो जैसे रो पड़ा था।

''चुप कर...'' पिताजी ने उसे डांट दिया और ताबीज में से कागज निकाल कर फटाफट उसे पढ़ने लगे। अगले ही पल पिताजी जोर जोर से हंसने लगे थे।

चिरंजीत तथा उसकी माँ विस्मित हो उनकी ओर देखने लगे थे। पिताजी ने ऊँची आवाज में कहा–''ले, सुन ले, इस ताबीज के मंत्र में क्या लिखा हैं...''

''चिरंजीत बेटे! भूत–प्रेत तथा जादू मंत्र का कोई अस्तित्व नहीं है। तुम्हारे आलस्य और लापरवाही का मनोवैज्ञानिक तौर पर इलाज करने के सिवा मुझे और कोई चारा नहीं सूझा। आशा है जादू ने काम किया होगा। तेरा मनु चाचा।''

एक बार तो चिरंजीव भी चकरा गया। मगर अगले ही पल वह मन ही मन खिल उठा था कि चाचा जी ने किस विचित्र ढंग से उसे सुधार दिया था।

• लुधियाना (पंजाब)

शब्द क्रीड़ा

सही उत्तर

१. जीजाबाई
२. दादोजी कोण्डदेव
३. नेताजी पालकर
४. जीवा महाला
५. तानाजी मालुसुरे
६. बाजीप्रभु देशपाण्डे
७. हीरोजी फर्जन्द
८. मोरारबाजी
९. गंगाभट्ट
१०. समर्थ रामदास स्वामी

देवपुत्र प्रश्नमंच

सही उत्तर

१. आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय
२. विश्वैश्वरैया
३. सर गंगाराम
४. डॉ. मेघनाद साहा
५. प्रो. सत्येन्द्रनाथ बोस
६. आ. जगदीशचन्द्र बसु
७. डॉ. श्रीश्रीनिवास कृष्णन्
८. श्री चन्दशेखर वैंकटरमन्
९. प्रो बीरबल साहनी
१०. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुलकलाम

विज्ञान पहेलियाँ

सही उत्तर

१. विटामिन - ए
२. रोडोप्सिन
३. लाइकोपीन
४. कोलस्ट्रोल
५. डी. ए. ए.
६. बायोडीजल

देखो अपनी आँख गड़ाः तारा किससे कौन बड़ा?

सही उत्तर

६, ७, १०, ९, ४, २, १, ३, ५, ८

जीवन शैली

हो दूर अंधेरा अज्ञान का फैले प्रकाश विज्ञान और ज्ञान का

प्रो. नन्दकिशोर मालानी

सन् १९३० के आसपास की बात है। मिदनापुर के घने जंगलों में भेड़ियों के एक समूह में दो मानव आकृतियाँ भी लोगों को देखने को मिलीं। प्रयत्न करके उनको जीवित पकड़ा गया और एक विद्या-आश्रम में रखा गया। वे दोनों लड़कियाँ थीं। उन्हें अमला और कमला नाम दिया गया। उन्हें रूप-रंग में यद्यपि वे मनुष्य जाति की थीं परन्तु खाना-पीना, दौड़-भाग, उच्चारण-आचरण आदि में भेड़ियों से बिल्कुल भी अलग नहीं थीं। सारे संसार का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ। वे समाचार पत्रों में छाई रहीं। उन पर अनेक प्रयोग हुए। उन्हें सभ्य और शिक्षित बनाने के सभी प्रयास निष्फल हो गए। वे उघाड़े बदन ही रहना चाहती थीं और भोजन में कच्चा मांस ही पसंद करती थीं। पांच-छः शब्दों से ज्यादा उन्हे सिखाया नही जा सका। मनुष्यों का संग भी उन्हें रास नहीं आया। कुछ समय बीतने पर उनकी मृत्यु हो गई। वे तन से मानवी थीं लेकिन मन से भेड़िया बन गई थीं।

मालूम हुआ कि उन दो बहिनों को भेड़िये उठाकर ले गए थे, जब वे बहुत छोटी थीं। यह विचित्र संयोग था कि भेड़ियों ने उन्हें मारा नहीं और वे उनके बीच पलती रहीं और बड़ी हो गईं।

इस घटना से दो अत्यंत महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकलते हैं-

(१) बचपन की शिक्षा-दीक्षा और पालन पोषण की संस्कृति से ही मनुष्यरूपी प्राणी वास्तव में सभ्य और सुसंस्कृत बनता है।

(२) **माता-पिता, परिवार, शिक्षक और समाज हमारे मन को गढ़ते हैं। बचपन ही पूरे जीवन की नींव है।** अंग्रेजी की कहावत **Child is the father of man** पूरी तरह चरितार्थ होती है।

मानव एक सीखने वाला प्राणी है। यदि शिक्षा नहीं होती तो मनुष्य और अन्य प्राणियों में कोई भी अन्तर नहीं होता। माता-पिता तो पूरे जीव-जगत में पाए जाते हैं। किन्तु शिक्षक केवल मनुष्य समाज में ही मिलता है। गुरु की महिमा अपार है।

भोजन, नींद, भय आदि सभी प्राणियों की जरुरतें हैं लेकिन भूषण, भाषा, भजन, भवन आदि केवल मानव संस्कृति की ही देन है, जिन्हें ज्ञान ने पैदा किया है।

ज्ञान- विज्ञान सीखने का सिलसिला पालने से शुरु होता है और अंतिम साँस तक चलता रहता है। विद्यार्थी जीवन बीत जाने के बाद भी हमें सीखना नहीं छोड़ देना चाहिए। शिक्षा का विस्तार जितना ज्यादा और जितना गहरा होता है समाज उतनी ही ज्यादा प्रगति करता है। मनुष्य जीवन की प्रत्येक क्रिया ज्ञान आधारित होनी चाहिए। सही बात तो यह है कि हमें जीवन भर एक विनयशील विद्यार्थी बने रहना चाहिए। यदि हम सीखने की कला सीख गए तो हमें पग-पग पर गुरु और शास्त्र मिल जाते हैं। गाने वालों को गीतों की कमी नहीं पड़ती ओर चलने वालों को राह मिलती जाती है। **जिसकी जिज्ञासा जागृत रहती है, उसकी जीवन प्रयोगशाला में मूर्ख लोग भी उपयोगी उपकरण बन जाते हैं। प्रकृति का पत्ता-पत्ता प्रशिक्षक बन जाता है।**

गीता में कहा गया है कि ज्ञानी व्यक्ति भगवान को सबसे अधिक प्रिय है। ज्ञानी वह नहीं है जिसने अपने मस्तिष्क को सूचनाओं का भण्डार गृह बना लिया है और किताबों को रट लिया है। ज्ञानी वह है जो अपने व्यवहार में विवेक का परिचय देता है। जो नैतिकता से जुड़ सके वह ज्ञानी है। ज्ञान वह प्रकाश है जो व्यक्ति और समाज के किसी भी कोने में घुसे हुए अंधेरे को दूर करता है। हमें बुरे से अच्छे की ओर ले जाता है। नीचे की ओर जाने से रोकता है। ऊँचाई के लिए उत्साहित करता है। **ज्ञान के बगैर कर्म अंधा हो जाता है और कर्म के बगैर ज्ञान लंगड़ा ही बना रहता है। नदी पार करने में जो महत्त्व नाव का होता है जीवन यात्रा में वही महत्त्व ज्ञान का होता है।**

आज के युग को विज्ञान का युग कहा जाता है। विज्ञान के

चमत्कारों ने दुनिया बदल दी है। चिकित्सा, यात्रा, मनोरंजन और संवाद को इतना आसान बना दिया है कि जिसकी कल्पना भी सौ साल पहले असंभव थी। विज्ञान ने प्रकृति के रहस्यों को उजागर किया है। और उस जानकारी को मशीनों का रूप देकर हमने अद्‌भुत सुविधाएँ जुटा ली हैं। हमारे घर, खेत, कारखाने, विद्यालय और चिकित्सालय टेक्नोलॉजी का भरपूर लाभ उठा रहे हैं। उसी टेक्नोलॉजी का दुरुपयोग भी बहुत हो रहा है। वातावरण प्रदूषण, कचरा, अपराध, आतंक और हिंसा भी सभी सीमाओं को तोड़ रहे हैं। सब्जी और फल काटने वाले चाकू से अपनी ही भाई–बहिन का गला भी काटा जा सकता है।

विज्ञान तो सत्य की खोज है वह बुरा नहीं हो सकता है। लेकिन उसका सहारा लेकर जो आधुनिक टेक्नोलॉजी बढ़ी है उसका अच्छा और बुरा दोनों ही तरह से उपयोग संभव है और किया भी जा रहा है।

टेक्नोलॉजी के उपयोग पर यदि विवेक अर्थात् अच्छे और बुरे के ज्ञान का नियंत्रण नहीं हुआ तो वह तारक की बजाए मारक ज्यादा बनती जाएगी।

यहाँ एक अच्छा प्रश्न उत्पन्न होता है कि ज्ञान और विज्ञान में क्या फर्क है?

ज्ञान इतना विस्तृत शब्द है कि उसमें विज्ञान भी समा जाता है। दोनों ही प्रकृति और मनुष्य के व्यवहार को समझने का प्रयास करते हैं। किसी विशेष दिशा में तर्क एवं गणितीय माप–तौल, अनुभव और प्रयोग के सहारे जो व्यवस्थित ज्ञान कोश बनता है उसे ज्ञान नाम दिया गया है। हमारे देश में प्राचीन काल में भी ज्ञान और विज्ञान को लेकर बड़ा चिन्तन–मनन हुआ है। गीता के सातवें अध्याय के 'ज्ञान विज्ञान योग' का नाम दिया गया है। आधुनिक युग में यूरोप ने विज्ञान के क्षेत्र में सराहनीय योगदान दिया है लेकिन उसकी नींव दशमलव गणित के रूप में भारत ने ही रखी थी। दिल्ली में कुतुबमीनार के पास स्थित लौह स्तम्भ आज भी भारत के प्राचीन धातु विज्ञान का झण्डा फहरा रहा है। हमारी संस्कृत भाषा, लिपि, आयुर्वेद और योग की वैज्ञानिकता को आज संसार में नई स्वीकृति मिल रही है। यूरोप के कैलेण्डर वर्ष में सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर इन चार महीनों के नाम संस्कृत भाषा पर ही आधारित हैं।

जगद्‌गुरु 'भारत' शब्द का आशय ही ऐसे सांस्कृतिक भूभाग से है जो ज्ञान की साधना में लगा हुआ है। यदि इक्कीसवीं सदी को 'ज्ञान की शताब्दी' का नाम सार्थक करना है तो हमारे देश को ही उसका नेतृत्व करना होगा।

'विज्ञान' सत्य का पता लगाता है और मनुष्य के हाथ में अद्‌भुत शक्ति दे देता है जिसका उपयोग व्यक्ति, समाज और प्रकृति के हित में करने की दृष्टि 'ज्ञान' देता है।

तन–मन के स्वास्थ्य निमय, धन एवं आचरण शुद्धि, संयम, विवेक, जीवन मूल्यों, धर्म आदि को जोड़कर एक शब्द में कहना हो तो वह 'ज्ञान' शब्द है।

'हमारी बुद्धि ज्ञानमय शुभ दिशा की ओर प्रेरित हो' यही प्रार्थना गायत्री महामंत्र में की गई है। 'वेद' शब्द का अर्थ ही ऐसे शास्त्रों से है जो ज्ञान प्रदान करते हैं। ज्ञान ऐसा नहीं, जो सातवें आसमान से हमारे मन में टपक गया हो। ज्ञान वह जो चिन्तन–मनन, तर्क–वितर्क, बौद्धिक आदा–प्रदा के आधार पर खड़ा हो। श्रद्धा तो हो परन्तु अंधी नहीं।

ज्ञान नैत्र है और विज्ञान उसकी सहायता के लिए लगने वाला चश्मा।

श्रद्धामयी साधना और अभ्यास से प्राप्त ज्ञान वैज्ञानिक सहायता से वैयक्तिक और समष्टिगत जीवन यात्रा को समृद्ध, सरल, सुखद और आनन्दमयी बनाए यही प्रार्थना ईश्वर के चरणों में हैं।

● **इन्दौर**
(लेखक देश के ख्यात चिंतक, विचारक और दार्शनिक विकास विशेषज्ञ हैं।)

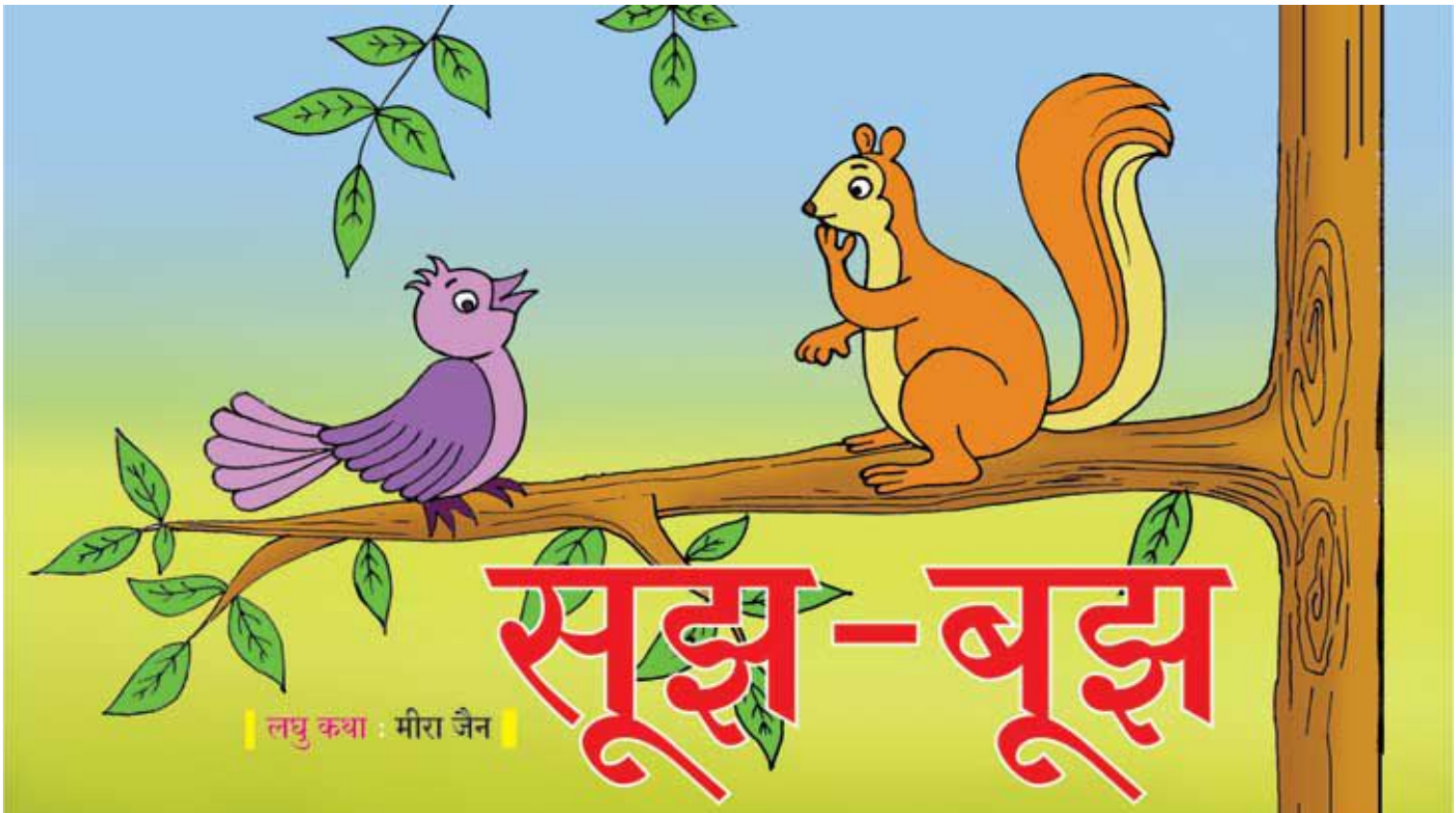

सूझ-बूझ

लघु कथा : मीरा जैन

जैसे ही तेज हवा चली आँधी की संभावना को देखते हुए रामी चिड़िया अपना घोंसला छोड़ पास ही वृक्ष पर बने लाली चिड़िया के घोंसले की सुरक्षा करने के लिए वहाँ जा पहुँची। दोनों ने अपने-अपने पंख फैला कर तेज आँधी से उस घोंसले की रक्षा की। लेकिन इस आँधी में रामी चिड़िया का घोंसला पूरी तरह तहस-नहस हो चुका था। लेकिन रामी चिड़िया के माथे पर सल तक नहीं था। उल्टे यह सोच-सोच खुश और उत्साहित हो रही थी कि लाली चिड़िया का घोंसला सुरक्षित बच गया।

इस पूरे दृश्य को उसी पेड़ पर रहने वाली गिलहरी पूरी तन्मयता से देख रही थी। किन्तु बहुत सोचने पर भी एक बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी कि आखिर लाली को रामी चिड़िया से कौन सा ऐसा स्वार्थ था जिसके खातिर उसने अपने घोंसले की बलि दे दी?

इसका कारण जानने के लिए गिलहरी मन ही मन अत्यंत बैचेन थी। अंततः अपनी जिज्ञासा शांत करने हेतु गिलहरी जा पहुँची रामी चिड़िया के पास और एकांत में ले जा कर उससे प्रश्न किया।

''रामी! क्या तुम्हारी बुद्धि पर ताला पड़ गया था। जो स्वयं के घोंसले को भाग्य भरोसे छोड़ लाली के घोंसले को बचाने गई। देखो, पूरा उजड़ गया तुम्हारा घर तो। क्यों किया तुमने ऐसा?''

इस पर हँसते हुए रामी चिड़िया ने बहुत ही सहज तरीके से अपना स्पष्टीकरण दिया- ''बहिन गिलहरी! मेरा घोंसला टूट कर बिखर गया उनका न मुझे पछतावा है और न ही लाली को क्योंकि इतनी तेज आँधी में घोंसले की सुरक्षा किसी एक के वश की बात नहीं थी हम दोनों को दो घोंसले बनाने के लिए नए सिरे से मेहनत करनी पड़ती अब सिर्फ एक ही घोंसला बनाना पड़ेगा।''

अगले दिन सुबह गिलहरी ने देखा रामी के अलावा लाली चिड़िया भी अपने सब काम छोड़ पूरी एकाग्रता के साथ नया घोंसला बनाने में रामी की सहायता कर रही थी।

● उज्जैन (म.प्र.)

लोककथा : दत्ता जंगम

गधा खेत खाय: जुलाहा मारा जाए

एक गांव में खंडू नाम का एक खेत मजदूर रहता था। वह झोंपड़े में दिन काटता था और गांव के किसानों के खेतों में काम कर अपना पेट पालता था। उसकी शादी नहीं हुई थी। बेचारा अकेला था और अकेलेपन का दुःख सहता था। साथ के लिए कोई तो होना चाहिए, ऐसा सोचकर उसने एक बंदर और बकरी को पाला। बकरी उसको दूध देती थी। वर्ष में दो बार मेमने देती थी। मेमने बेचकर उसकी हथेली पर कुछ रुपए पड़ते थे।

बंदर भी मुफ्त की रोटी नहीं तोड़ता था। वह खंडू का हाथ बंटाता था। पास के खेतों से मक्का की अधपकी बालियाँ लेकर आता था। कभी बैंगन और हरी सब्जियां भी लाता था। इस कारण खंडू मजे से रहता था।

खंडू के गांव से दस पन्द्रह कोस पर उसका ननिहाल था। वहाँ से उसके मामा का पत्र आया। पत्र में लिखा था...

'प्यारे खंडू को

मामा के अनेक आशीष!

खत भेजने का कारण यह है कि पास के गाँव में तेरे लिए एक लड़की देखी है। लड़की गरीब और सुंदर है। आशा है तुझे पसंद आएगी। हो सके तो तुरंत आ। तेरी प्रतीक्षा में....मामा'

पत्र पढ़कर खंडू बाग–बाग हो गया। उसने अगले दिन सुबह सुबह गेहूँ की खीर बनाई। वह मटके में भर ली और बंदर तथा बकरी को साथ लेकर ननिहाल की ओर चल पड़ा।

बैसाख का महिना था। गरमी की तपिश बहुत बढ़ी थी। तपिश के कारण खंडू का शरीर पसीने से लथपथ भीगा हुआ था।

चलते चलते उसे नदी मिली। नदी में ज्यादा पानी नहीं था। लोग चलकर नदी पार करते थे। खंडू ने नदी में नहाने का सोचा। उसने एक गाछ (पेड़) से बंदर और बकरी को बाँधा और नदी के पानी में उतर गया।

खंडू ने मटके में बाँधकर क्या रखा है? यह जानने की बंदर को इच्छा हुई। उसने गाछ से बाँधी अपनी रस्सी छोड़ी। मटके को बाँधा हुआ चीथड़ा हटाया और मटके के अंदर झाँका। मटके में गेहूँ की खीर थी। खीर की खुशबू बंदर को भायी। उसने पेटभर खीर खा ली। अब मटके मे थोड़ी ही खीर बची थी। यह देखकर बंदर घबरा गया।

किन्तु यकायक बंदर को एक युक्ती सूझी।

बंदर जब खीर खा रहा था। तब बकरी उसकी ओर भुक्खड़ की नजर से ताक रही थी। इस कारण बंदर ने मटके की बची खीर बकरी को खिलाई और अपने खीर के जूठे हाथ बकरी के मुँह पर पोंछे। इसक कारण बकरी के मुँह पर खीर के छींटे दिखाई देने लगी।

बंदर ने बकरी की गाछ से बाँधी रस्सी खोल दी। अपनी रस्सी गाछ से बाँधी और गहरी नींद का स्वाँग लेकर गाछ की छाँव में लेटा रहा।

खंडू ने बकरी के मुँह पर खीर के छींटे देखे। वह आग बबूला हो गया उसने बकरी को बहुत पीटा।

बेचारी बकरी सीधी थी। उसने खंडू से हुई पिटाई सह ली।

कहते हैं ना...

गधा खेत खाय... जुलाहा मारा जाए!

● इस्लामपुर (महाराष्ट्र)

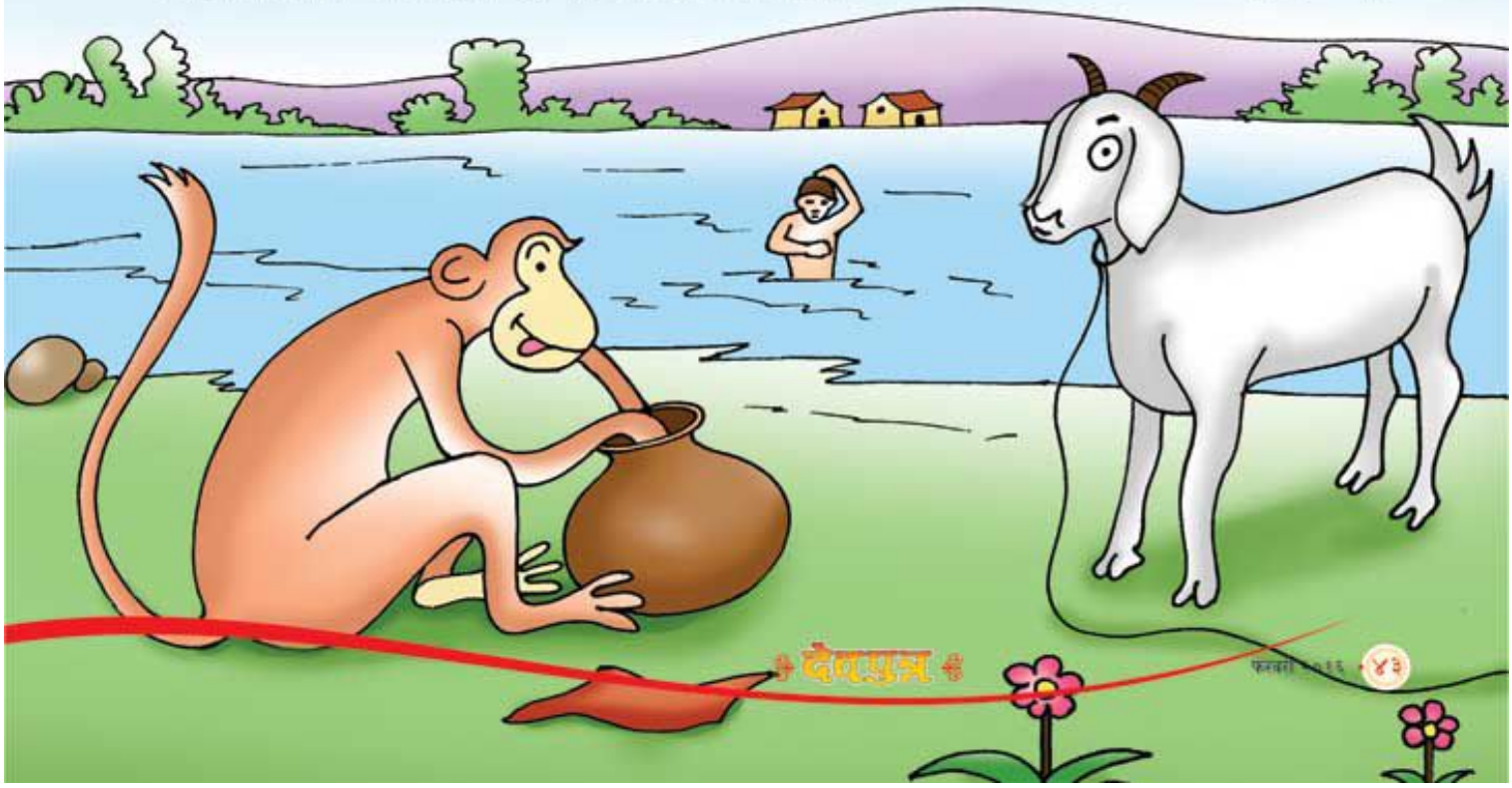

कहानी : डॉ. पूर्णिमा मित्रा

हार का भूत

पूजा चन्दनपुर के आदर्श विद्यालय में छठी कक्षा में पढ़ती थी। उसके पिता सूरतगढ़ के पास एक ढाणी में रहते थे। वहाँ पांचवी तक ही एक सरकारी विद्यालय था। पांचवी में वह पूरे विद्यालय में सर्वाधिक अंक लाई थी।

इसीलिए उसके पिता ने आगे की पढ़ाई के लिए उसे उसके ननिहाल भेज दिया।

पहले–पहल पूजा का मन, नए माहौल में नहीं लगा। लेकिन उसकी छोटी मामी कविता ने उसे नए माहौल में तालमेल बिठाने में बहुत मदद की।

कुछ दिनों में अपने मिलनसार स्वभाव के कारण पूजा सबकी चहेती हो गई। उसकी कक्षाध्यापिका मौसमी उससे विशेष स्नेह रखती थी।

प्रथम परख में पूजा कक्षा छह के चार वर्गों में प्रथम आई। उसे कक्षा का प्रतिनिधि बनाया गया। यह देखकर उसकी कई सहपाठिनें उससे जलने लगी।

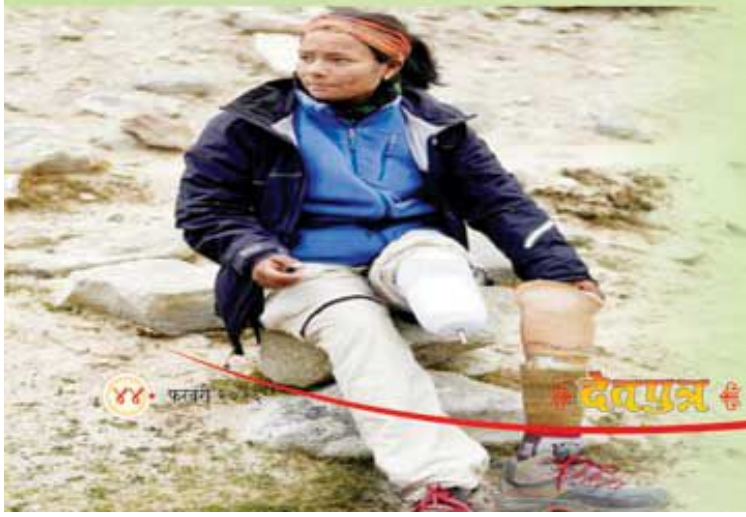

राहूल, रौनक और युवराज को लगा कि, अब वे कक्षा में शरारत नहीं कर पाएंगे। वे अक्सर पूजा को नीचा दिखाने का मौका ढूंढते रहते थे।

कुछ दिनों बाद, विद्यालय में जिलास्तरीय सुलेख और चित्रकला प्रतियोगिता के आयोजन की घोषणा हुई।

प्रतियोगिता के दो दिन पहले उपस्थिति लेने के बाद मौसमी को, प्रतिभागियों ने अपने नाम लिखाने शुरु कर दिए। लेकिन पूजा और आशा गुमसुम सी बैठी रही। मौसमी से जब उसने इसका कारण पूछा तो पूजा शर्माते हुए बोली– ''दीदी, बुलबुल की ताई जी यहाँ शिक्षिका हैं। वे तो बुलबुल को घर पर अच्छे से अभ्यास करवा देंगी। फिर बुलबुल ही प्रथम या द्वितीय आएगी।''

पूजा की बात सुनकर मौसमी को बड़ी हैरानी हुई। वह कुछ कहे उससे पहले ही बुलबुल बीच में बोल पड़ी– ''मैंने तो कब से ताईजी के पास बैठकर सुलेख का अभ्यास शुरु कर दिया।''

गरिमा को अपने चित्रकार पिता पर बड़ा गर्व था। वह पूजा की तरफ उपेक्षा भरी दृष्टि डालकर बोली– ''मेरे पिताजी तो हमेशा मुझे ऐसी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं। मुझे तो उन्होंने चित्रकथा और लिखावट का कार्य भी करवा रखा है।''

शरारती राहुल, कार्बन पेपर की सहायता से एक छपा चित्र दिखाते हुए बोला– ''मैं चाहूं तो मिनटों में ऐसा चित्र बना सकता हूँ। पिछली बार सुलेख में मेरा तीसरा स्थान आया था।''

कोमल आँखें मटकाती हुई बोली–''मैं तो तीज–त्यौहारों में मेंहदी के बेलबूटे माँडते–माँडते परेशान हो जाती हूँ। गलीवालियाँ मुझे 'हीना क्वीन' कहती हैं।''

अपने सहपाठिनों के मुँह से ये सब बातें सुनकर पूजा और आशा का चेहरा बुझ सा गया। मौसमी को अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने वाले इन बच्चों पर क्रोध तो आया। फिर उसने सोचा, कि इनमें इन बच्चों की कम, इनके माता–पिता का दोष अधिक हैं। लेकिन इससे पूजा जैसे मेहनती

और संकोची बच्चे, हीनभावना से ग्रस्त हो जाएंगे। जिससे वे ऐसी प्रतियोगिताओं में नाम ही नहीं लिखाएंगे तो जीतेगे कहाँ से?

आखिरकार उसे इसका हल सूझ गया। वह बोली, पूजा की तरह हारने से पहले, हार मानने वाले बच्चे अपना हाथ खड़ा करें।'' यह सुनते ही बच्चे चमक गए। पूरी कक्षा में शांति छा गई।

अचानक पूजा की खास सहेली आशा हिम्मत करके बोली– ''अगर हम सफल नहीं हुए तो सभी हमारी हँसी नहीं उड़ाएंगे?''

मौसमी को अब पूजा और आशा के डर की असली कारण का पता चल गया।

उसने सभी बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा– ''हिमालय की चोटी पर चढ़ना आसान है या मुश्किल?''

'' बहुत कठिन काम है, दीदी! पहाड़ की चोटी पर पैर फिसलने से जान जाने का खतरा रहता है। ''कोमल सिहरते हुए बोली, तो पूरी कक्षा में भय की लहर दौड़ पड़ी। सारे बच्चे सिमट कर बैठ गए। ''फिर भी हर साल लोग हिमालय की चोटी पर चढ़ते हैं या नहीं?'' मौसमी ने पूछा तो सारे बच्चों ने स्वीकृति में सिर हिलाया। मौसमी ने उन्हें प्रोत्साहित करते हुए पूछा– ''कुछ महीने पहले अरुणिमा सिन्हा एक नकली पांव लगाकर, एवरेस्ट की चोटी पर तिरंगा लहरा सकती है, तो तुम विद्यालय में बैठे–बैठे इन निःशुल्क प्रतियोगिताओं में भागीदारी करने से क्यों डर रही हो?''

मौसमी की बात सुनकर अधिकांश बच्चे सोचने लगे कि काश वे भी पहले से ऐसी प्रतियोगिताओं में भाग लेते तो उनके मन में हारने का भूत तो निकल गया होता।

पूजा सकुचाते हुए बोली– ''दीदी! मेरा और आशा का दोनों प्रतियोगिताओं में नाम लिख दीजिए। जो होगा, वह देखा जाऐगा।''

आशा भी हुलसते हुए बोली– ''और क्या? **हार गए हारने का तो गम नहीं, जीत गए तो हम किसी से कम नहीं।**''

''चलो इन दोनों की तरह बाकी लोग भी हार का भूत अपने मन से निकाल दो।'' कहकर मौसमी ने राहत की साँस ली।

तभी उसकी नजरें बच्चों के उल्लसित चेहरों पर पड़ी। उन्हें देखकर, मौसमी का मनमयूर खुशी से नाचने लगा। उसके चेहरे की चमक उनके दिल का हाल बता रही थी।

● **बीकानेर (राज.)**

सबसे लम्बी कहानी

बाल लेखनी : नीतिन भदौरिया

बहुत पुरानी बात है। किसी राज्य में एक राजा राज्य करता था। राजा बहुत घमंडी था। एक बार राजा को सबसे लम्बी कहानी सुनने की इच्छा हुई। राजा के आदेश के अनुसार राज्य में घोषणा कराई गई कि जो राजा को सबसे लम्बी कहानी सुनाएगा उसे बहुत बड़ी की जागीर इनाम में दी जाएगी। परन्तु जिसकी कहानी लम्बी न हुई उसे कारागार में डाल दिया जाएगा। यह सुनकर दूर-दूर से कहानी कहने वाले आए, परन्तु राजा को संतुष्ट न कर पाए। राजा सोचता कि कहानी तो सुन ली। अब व्यर्थ में जागीर क्यों दूं। धीरे-धीरे बहुत से कहानीकारों को कारागार में बंद कर दिया गया। कहानीकारों के नौजवान बेटे को अपने पिता को कारागार से बन्द देख बहुत ही बुरा लगा। उसने राजा को सबक सिखाने का मन बना लिया और जा पहुँचा राजदरबार कहानी सुनाने के लिए। नौजवान बोला- महाराज! किसान का बहुत बड़ा खेत था। उसने ज्वार बो रखी थी। पास ही एक चिड़िया का झुंड रहता था। इसलिए जब भी किसान बीज बौने आता तो चिड़िया बीज निकालकर खा लेती थी। एक बार किसान ने सोचा कि वह खुद अपने खेत की रखवाली करेगा चिड़ियाएँ भी कौन सी हार मानने वाली थीं।उन्होंने भी योजना बनाई। उनका काम आसान हो गया। एक चिड़िया आई दाना चुगा और हो गई फुर्र और फिर एक और चिड़िया आई दाना चुगा और हो गई फुर्र और फिर एक और चिड़िया आई दाना चुगा और हो गई फुर्र, फिर एक और चिड़िया आई दाना चुगा और हो गई फुर्र राजा बोला- ''फिर आगे क्या हुआ?'' वही तो कह रहा हूँ महाराज! चिड़िया आई दाना चुगा और हो गई फुर्र।'' राजा बोला ''चलो मान लिया सारी चिड़िया और सारे दाने चुग लिए। ''ऐसे कैसे चुग लिए महाराज! एक-एक चिड़िया एक-एक दाना चुगेगी तभी तो कहानी आगे बढ़ेगी। राजा समझ गया कि ''आज सेर को सवा सेर मिला है। उसने कहा ''नौ जवान ''तू फुर्र-फुर्र बंद कर सचमुच तेरी कहानी सबसे लम्बी है। तुझे जागीर इनाम में दी जाती है।'' परन्तु महाराज! मेरा मुंह माँगा इनाम हाँ-हाँ वह भी मिलेगा। बोलो तुम्हें क्या चाहिए।'' ''महाराज मेरा इनाम यही कि आप सभी बंदी कहानीकारों को छोड़ दे।'' बिना बात के किसी को सताना अच्छी बात नहीं।'' युवक ने कहानी सुनाकर राजा को सुधार दिया।

• मुरैना (म.प्र.)

विज्ञान कविता : डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष'

रोबोट
(यंत्र मानव)

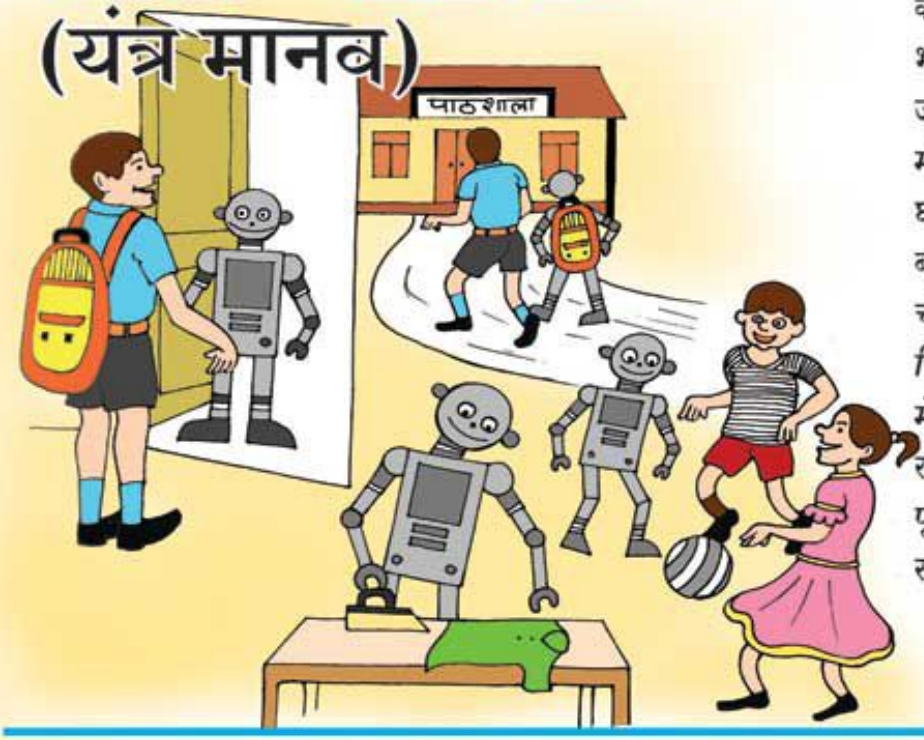

जब मैं विद्यालय से आऊँ।
अपने घर की बेल बजाऊँ।
स्वागत करे द्वार पर आकर,
छोटा सा रोबो मँगवाऊँ।
कभी साथ विद्यालय जाए।
भारी बस्ता वह ले जाए।
जमकर मदद करे पढ़ने में,
मेरा होमवर्क निबटाए।
घर का सारा काम सँभाले।
बढ़िया भोजन स्वयं बना ले।
चैन मिले मेरी माता को,
जिम्मेदारी वही उठा ले।
मेरे साथ शाम को खेले।
रजनी दीदी को सँग लेले।
पूरा हो यह मेरा सपना
सब कर दे रोबोट अकेले।

• आगरा (उ.प्र.)

समाचार

श्री राजन सम्मानित

आकोला। प्रसिद्ध साहित्यकार राजकुमार जैन राजन को जबलपुर की राष्ट्रीय संस्था कादम्बरी द्वारा अखिल भारतीय साहित्यकार/पत्रकार सम्मान समारोह में ''स्व. मानकलाल शिवहरे सम्मान २०१५'' से विभूषित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महामण्डलेश्वर स्वामी प्रज्ञानंद जी ने की। मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. राजकुमार सुमित्र थे।

बाल साहित्य में योगदान के लिए श्री राजन को अनेक प्रसिद्ध साहित्यकारों व पत्रकारों की उपस्थिति में सम्मान स्वरूप नगद राशि, अंगवस्त्रम्, प्रशस्ति पत्र एवं परिचय स्मारिका भेंट की गई।

घर में बहुत जरूरी है दादा दादी का कमरा

देवपुत्र गौरव सम्मान समारोह में बताया डॉ. मृदुला सिन्हा ने

इन्दौर। ६ जनवरी २०१६ देवपुत्र की ३५ वर्षीय गौरव यात्रा में एक अविस्मरणीय स्वर्णिम संध्या जोड़ गई। स्थानीय एसजीएसआईटीएस के स्वर्ण जयंती सभागार में आयोजित देवपुत्र के पांचवें देवपुत्र गौरव सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि की आसंदी से गोवा की महामहिम राज्यपाल एवं देश की ख्यातनाम साहित्यकार डॉ. (श्रीमती) मृदुला सिन्हा ने बच्चों के जीवन में दादा-दादी, नाना-नानी की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए, घर परिवार में उनकी आवश्यकता को रेखांकित किया। वे २०१४ के लिए पुणे की डॉ. मालती शर्मा 'गोपिका' एवं २०१५ के लिए भोपाल के डॉ. परशुराम शुक्ल को प्रतिष्ठित देवपुत्र गौरव सम्मान प्रदान करने पधारी थीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्याभारती के राष्ट्रीय मंत्री, संस्कृति शिक्षा संस्थान के राष्ट्रीय सचिव एवं विद्याभारती प्रदीपिका के सह संपादक मा. अवनीश जी भटनागर (कुरुक्षेत्र) कर रहे थे।

मा. मृदुला सिन्हा जी ने अपने भावपूर्ण और प्रेरक प्रबोधन से श्रोताओं के मानस पर गहरी छाप छोड़ते हुए परिवार में बच्चों को संस्कार देने के लिए बड़ों के आत्मीय सान्निध्य को महत्वूर्ण एवं अनिवार्य बताया। उन्होंने कहा बच्चों को बड़ों का स्नेहिल स्पर्श चाहिए। बच्चों के बीच हमारा मन स्वतः हल्का हो जाता है। आपने लोक साहित्य के उदाहरणों एवं प्रसंगों से बालमन की अपेक्षा एवं वृद्धों की उनके प्रति भूमिका का मार्मिक पक्ष प्रकट किया।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में मा. अवनीश जी भटनागर ने बाल शिक्षा और बाल साहित्य के पारस्परिक सम्बन्धों की

अभिन्नता को समझाते हुए। बच्चों को सम्मान उनकी क्षमताओं के आकलन एवं स्पर्द्धा के दबाव से मुक्त कर विकसित होने देने जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर अपनी प्रभावी एवं उद्धरणमयी शैली से ध्यानाकर्षण किया। वे शिक्षा में लोक साहित्य, बाल साहित्य, संस्कार एवं परिवार के प्रभावों को स्पष्ट कर रहे थे। शिक्षा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए आपने नवीन ज्ञान का सृजन, पुराने ज्ञान का हस्तांतरण नई पीढ़ी को करना एवं जीवन की चुनौतियों से सामना करने की क्षमता उत्पन्न करना ये तीन प्रमुख उद्देश्य बताए एवं इनको प्राप्त करने में अच्छे बाल साहित्य की आवश्यकता पर बल दिया।

समारोह में गुड़गांव हरियाणा के लब्धप्रतिष्ठ बाल साहित्यकार श्री घमण्डीलाल अग्रवाल को उनकी बाल काव्य कृति 'ज्ञान विज्ञान सिखाती कविताएं' डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित देवपुत्र के सहयोग से प्रदान किए जाने वाले मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१४ एवं मुक्त संवाद के सह अयोजकत्व में आयोजित देवपुत्र बाल नाट्य स्पर्द्धा २०१५ के प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दोनों पुरस्कार स्वरूप पांच पांच हजार की राशि भेंट की जाती हैं।

कार्यक्रम का एक ओर महत्वपूर्ण सोपान पुस्तक लोकार्पण का था। जिसमें डॉ. मालती शर्मा की 'परम्परा का लोक' एवं अ.भा. साहित्य परिषद के जिला महामंत्री श्री राजेन्द्र कोचला 'अम्बर' की पांच कृतियाँ अनंत यात्रा (कहानी संग्रह), परिन्दों की बस्ती में (कविता संग्रह), तृष्णा (कविता संग्रह), जय हो मेरे देश की एवं चंदा नाचे धीरे धीरे (दोनों बाल कविता संग्रह) लोकार्पित किए गए। भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान की शोध पत्रिका 'समकालीन बाल साहित्य' का प्रवेश अंक भी अतिथियों ने लोकार्पित किया। बाल साहित्य की यह शोध पत्रिका डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा संपादित है।

प्रारंभ में संगीतकार गौतम काले की सुशिष्याओं ने सस्वर सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। अतिथियों का स्वागत प्रधान संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना, न्यासी डॉ. कमलकिशोर चितलांग्या, दिल्ली प्रतिनिधि श्री अरविन्द जी सैनी, अ.भा. साहित्य परिषद के जिलाध्यक्ष श्री रामचन्द्र जी अवस्थी एवं उपाध्यक्ष डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम में महापौर श्रीमती मालिनी गौड़, विधायक द्वय श्री महेन्द्र हार्ड़िया, श्री राजेश सोनकर सहित अनेक गणमान्य नागरिक एवं वरिष्ठ साहित्यकार उपस्थित थे।

कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रबंध संपादक डॉ. विकास दवे ने किया।

यह गरिमामय आयोजन अहिल्यानगरी की सांस्कृतिक परम्परा में एक अविस्मरणीय सारस्वत पर्व जोड़ा गया।

विनम्र नमन...
सादर श्रद्धांजलि...

गत मास देवपुत्र ने अपने एक बड़े हितेषी, शुभचिंतक और संरक्षक को खो दिया। देवास (म.प्र.) के सुप्रसिद्ध अभिभाषक श्री नारायणदास जी मूंदड़ा देवपुत्र की प्रकाशन संस्था श्री सरस्वती बाल कल्याण संस्थान के प्रारम्भ से न्यासी थे और प्रारम्भिक कठिनाईयों से पार पाने में उन्होंने भरपूर सहायता की थी।

इन्दौर में ही सन् १९२८ में जन्मे श्री मूंदड़ा की शिक्षा उज्जैन में हुई और वहीं से उनके सार्वजनिक जीवन का शुभारम्भ हुआ। वे बाल्यकाल से ही स्वयंसेवक रहे। संघ का तीनों वर्ष का प्रशिक्षण पूरा करने के बाद कुछ समय तक वे संघ के प्रचारक रहे। विद्यार्थी नेता के रूप में भी वे यशस्वी थे और बाद में राजनीति से जुड़ने के बाद गोवा के बलिदानी राजाभाऊ महाकाल जैसी विभूतियों के साथ काम किया। प्रत्यक्ष चुनाव संचालन से लेकर राजनैतिक आन्दोलन और जेल यात्रा तक राजनेता के रूप में जो भी करना पड़ा वह किया।

किंतु उनकी मुख्य रुचि अपने समाज देवता की सेवा ही थी। इसलिए देश विभाजन के बाद आए अपने शरणार्थी बन्धुओं की सेवा, बाद में वास्तुहारा समिति के माध्यम से सेवा कार्य और स्थानीय स्तर पर अनेक सेवा कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

शिक्षा के क्षेत्र से उनका विशेष लगाव था। सन् १९७४ में देवास में सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना से लेकर जीवन के अंतिम दिनों तक वे उसकी व्यवस्थाओं से किसी न किसी प्रकार जुड़े रहे। देवास नगर और जिले में सरस्वती शिशु मंदिर योजना के पर्याप्त विस्तार के बाद वे उसके प्रांतीय संगठन सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान के सचिव और उपाध्यक्ष रहे। उसकी प्रकाशन संस्था अर्चना प्रकाशन की स्थापना की और उसके पहिले अध्यक्ष बने। अवश्यक्तानुसार प्रदेश भर में प्रवास करके शिशु मंदिर योजना को गति दी।

देवपुत्र के वे बड़े हितचिंतक और मार्गदर्शक थे। देवपुत्र के प्रारम्भिक दिनों में जब वह ग्वालियर से प्रकाशित होता था, तब उन्होंने उसके प्रतिनिधि के रूप में विस्तार के लिए भरसक प्रयत्न किए और जब उसका प्रकाशन इन्दौर से प्रारम्भ (सन् १९९१) हुआ तब उसकी जड़ें मजबूत करने और विस्तार देने में सभी प्रकार का सहयोग किया। बाद में जब देवपुत्र प्रकाशन का दायित्व सरस्वती बाल कल्याण न्यास की स्थापना कर उसे सौंपा गया तब उसके प्रथम न्यासी बने और उसके भवन निर्माण से लेकर सभी प्रकार के विस्तार और ऊंचाइयों के लिए उसका मार्गदर्शन किया।

१७ दिसम्बर २०१५ को उन्होंने अपनी थोड़े समय की बीमारी के बाद हमसे विदा ले ली। उनका अभाव हमारे लिए सदा खटकने वाला अभाव रहेगा और उसकी पूर्ति अत्यंत कठिन होगी। वे अत्यंत जीवट वाले व्यक्ति थे और देवपुत्र के हित की बात वे किसी भी अवसर पर अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ रखते थे।

वे अब नहीं हैं। उनका मार्गदर्शन ही अब हमारा पथ प्रदर्शन करेगा। देवपुत्र परिवार का विनम्र नमन और सादर श्रद्धांजलि।

- कृष्णकुमार अष्ठाना

परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मन्दिर

सी० सै० स्कूल (आवासीय) वृन्दावन, मथुरा

Affiliated to CBSE, Ph.: (0565) 2442407, 8191019807

Website : www.pddsvm.com, E-mail : pdd_svidyamandir@yahoo.com

भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी को आमंत्रण देते हुए राष्ट्रपति भवन में विद्यालय के प्रबन्धक, प्रधानाचार्य, बाँके बिहारी शर्मा एवं अनुराग गोस्वामी

विद्यालय में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी, प्रबन्धक पद्मनाभ गोस्वामी एवं राज्यपाल श्री राम नाईक को सम्मानित करते हुए प्रधानाचार्य

* विद्याभारती से सम्बद्ध भारतीय परिवेश से परिपूर्ण संस्कारक्षम वातावरण। * हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था। * विद्याभारती एवं एस०जी०एफ०आई० की खेलकूद प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन। * आधुनिक उपकरणों सहित भौतिक, रसायन, जीव विज्ञान, गणित एवं कम्प्यूटर की प्रयोगशालाएँ, समृद्ध पुस्तकालय एवं विशाल क्रीडांगन, शारीरिक विकास हेतु व्यायामशाला (जिम) की व्यवस्था। * एल०सी०डी० एवं स्मार्ट क्लास द्वारा शिक्षण व्यवस्था। * आधुनिक सुविधाओं से युक्त 140 छात्रों हेतु छात्रावास की व्यवस्था। * छात्रावास में प्रवेश कक्षा 6 से 9 तक ही सम्भव। * कक्षा द्वादश में शत प्रतिशत परीक्षाफल के साथ विद्याभारती पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में प्रथम स्थान। * *IIT, MBBS, IAS* एंव अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में छात्रों का चयन। * विद्यालय के पूर्व छात्र यशपाल शर्मा का *IAS* में तथा गोविन्द यादव का *PCS* में चयन। * भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी का विद्यालय में आगमन।

अध्यक्ष	प्रबंधक	प्रधानाचार्य
पी०एल०यादव	पद्मनाभ गोस्वामी	शिशुपाल सिंह

गीता निकेतन आवासीय विद्यालय

कुरुक्षेत्र (हरियाणा) दूरभाष : 01744–290696, 294064

E-mail : gitaniketan@rediffmail.com Website : www.gitaniketan.org

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा संरक्षित

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) से मान्यता प्राप्त

प्रवेश सूचना - 2016-17

कक्षा 6th, 9th एवं 11th में

प्रवेश हेतु पंजीकरण प्रारम्भ

प्रवेश परीक्षा

रविवार 20 मार्च 2016 प्रातः 10 बजे
(कक्षा 6th से 9th)

रविवार 27 मार्च 2016 प्रातः 10 बजे
(कक्षा 11th)

- युगमनीषी परमपूजनीय श्री गुरूजी द्वारा 1973 में स्थापित।
- 44 वर्षों से उत्कृष्टता की एक गौरवशाली परम्परा।
- बोर्ड व प्रतियोगी परीक्षाओं में सर्वोत्तम परिणाम।
- डिजीटल कक्षाएं एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग व्यवस्था।
- विभिन्न व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में अनेक छात्रों का चयन।
- सह–शैक्षणिक गतिविधियों एवं खेल प्रतियोगिताओं में प्रान्त एवं राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन।
- प्रतिभाखोज परीक्षा (NTSE) एवं विभिन्न ओलंपियाड स्पर्धाओं में छात्रों का चयन।
- देश के 16 राज्यों के छात्र अध्ययनरत, 600 छात्रों के आवास की व्यवस्था।
- 10 एकड़ का मनोरम, भव्य, आकर्षक परिसर एवं संस्कारक्षम परिवेश।

विवरणिका

कार्यालय से 250/-

डाक द्वारा 300/-

प्राचार्य

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

मायाश्री
राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार
प्रविष्टियां आमंत्रित

प्रख्यात बाल साहित्यकार डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१६ हेतु प्रविष्टियाँ सादर आमंत्रित हैं।

इस वर्ष यह पुरस्कार वर्ष २०१५ में प्रकाशित बाल नाटकों की मौलिक कृति पर प्रदान किया जाएगा। प्रविष्टियाँ भेजने की अंतिम तिथि ३१ मार्च २०१६ रहेगी। प्रविष्टिस्वरूप प्रकाशित पुस्तक की तीन प्रतियाँ अपेक्षित हैं। उक्त पुरस्कार हेतु पुरस्कृत कृति को ५०००/- की राशि भेंट की जाती है।

प्रविष्टि भेजने का पता

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार

सम्पादक-देवपुत्र ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

भवालकर स्मृति कहानी
प्रतियोगिता २०१६

प्रिय बच्चो,

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति (७ जनवरी) के अवसर पर **भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता** के लिए आपकी स्वरचित बाल कहानियाँ प्रविष्टि के रूप में आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता केवल बाल लेखकों के लिए है अतः कहानी के स्वरचित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम कक्षा एवं घर के पते का पिनकोड सहित स्पष्ट उल्लेख अवश्य करें।

आपकी बाल कहानी हमें ३१ मार्च २०१६ तक अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। कहानी इस पते पर भेजें-

पुरस्कार

प्रथम : १५००/- ● द्वितीय : ११००/- ● तृतीय : १०००/-

५५०/- के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

भवालकर स्मृति
कहानी प्रतियोगिता २०१६
देवपुत्र
४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित प्रधान संपादक - कृष्णकुमार अष्ठाना